RNI No. UPHIN/2000/03766 • ISSN No. 2581-3528 | ₹ : 20

केशव संवाद

(फरवरी-2025)

NVS-02

भारत की अंतरिक्ष उड़ान का शतक

हिन्दू पंचांग फरवरी-2025

फरवरी			2025		FEBRUARY	
रवि SUN	सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरु THU	शुक्र FRI	शनि SAT
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	

फरवरी -2025 (व्रत-त्यौहार)

- **02** रविवार — वसन्त पञ्चमी
- **04** मंगलवार — रथ सप्तमी
- **05** बुधवार — भीष्म अष्टमी
- **08** शनिवार — जया एकादशी
- **09** रविवार — प्रदोष व्रत
- **12** बुधवार — कुम्भ संक्रान्ति, माघ पूर्णिमा, अन्वाधान
- **13** बृहस्पतिवार — इष्टि
- **16** रविवार — द्विजप्रिय संकष्टी चतुर्थी
- **24** सोमवार — विजया एकादशी
- **25** मंगलवार — प्रदोष व्रत
- **26** बुधवार — महा शिवरात्रि
- **27** बृहस्पतिवार — दर्श अमावस्या, अन्वाधान, फाल्गुन अमावस्या
- **28** शुक्रवार — इष्टि

केशव संवाद

RNI No. UPHIN/2000/03766

ISSN No. 2581-3528

फरवरी, 2025

वर्ष : 25 अंक : 02

प्रबंध निदेशक

अणंज कुमार त्यागी

संपादक

कृपाशंकर

कार्यकारी संपादक

डॉ. नीलम कुमारी

पृष्ठ संयोजन

वीरेंद्र पोखरियाल

संपादकीय कार्यालय

प्रेरणा शोध संस्थान न्यास

सी-56/20 सेक्टर-62, नोएडा -201309

फोन न. 0120 4565851

ईमेल : keshavsamvad@gmail.com

वेबसाइट : www.prernasamvad.in

स्वामी पंकज कुमार की ओर से मुद्रक/प्रकाशक रमन चावला द्वारा चन्द्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा.लि. नोएडा से मुद्रित तथा केशव भवन 105 आर्यनगर सूरजकुंड रोड मेरठ से प्रकाशित

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा मेरठ की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा। संपादक

विषय सूची

ज्ञान महाकुम्भ - 2081 -डॉ.नीलम कुमारी.....05

बसंतोत्सव एवं महाकुम्भ: वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक महत्व - डॉ. शिवा शर्मा.........08

भारत की अंतरिक्ष उड़ान का शतक :NVS-02 - मानस वर्मा..............10

कुटुंब प्रबोधन : संस्कारों से सशक्त होता परिवार -मीनू वर्मा...............12

पुस्तक समीक्षा - स्वामी विवेकानंद का 'हिन्दू चिंतन' -विदुला कौशिक........13

नोएडा की चर्चा 'ग्रीन वॉरियर' शैल माथुर के साथ -धीरज त्रिपाठी..........14

वित्तीय वर्ष 2025-26 का अतुलनीय बजट - प्रहलाद सबनानी.......16

आत्मनिर्भरता के साथ रक्षा क्षेत्र में भारत की मजबूती - पंकज जयस्वाल......18

जैसा कर्म वैसा फल, बंद हो गई हिंडनबर्ग - मृत्युंजय दीक्षित........20

बच्चों में संस्कार जागरण -मिली संगल............22

जन्मदिवस विशेष - महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' -डेस्क.................23

पाठकगण पत्रिका के बारे में अपने सुझाव एवं प्रतिक्रिया,'संपादक के नाम पत्र' शीर्षक से ई-मेल (keshavsamvad@gmail.com) के माध्यम से भेज सकते हैं। चुने हुए पत्रों को पत्रिका के अगले अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

ISSN No. 2581-3528

संपादकीय..

परम्परा से पोषित ज्ञान के नवसृजन से प्राप्त होगा विकसित भारत-2047 का लक्ष्य

'वसुधैव कुटुंबकम्' एवं 'सर्वे भवंतु सुखिनः' जैसा लोक-कल्याणकारी एवं सार्वभौमिक संदेश भारत की संस्कृति में निहित है। हमारी संस्कृति हमारे देश की आत्मा की अभिव्यक्ति है। इसलिए भारत के ज्ञान भंडार में नए ज्ञान का सृजन करते हुए हम भावी पीढ़ी का नवनिर्माण करें यही हमारे जीवन का लक्ष्य होना चाहिए।

विश्व गुरु की ओर अग्रसर भारत ने यह प्रमाणित कर दिया है कि धरती से लेकर आकाश तक भारत संपूर्ण विश्व का सिरमौर है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन इसरो ने हाल ही में NVS- 02 नेवीगेशन सेटेलाइट को सफलतापूर्वक लॉन्च करके एक महत्वपूर्ण उपलब्धि प्राप्त की है, जो भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम के लिए ऐतिहासिक क्षण है। यह उपलब्धि भारत को एक सशक्त, समृद्ध एवं आत्मनिर्भर देश बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगी। ऐसी उपलब्धियों से ही विकसित भारत-2047 के हमारे स्वप्न का मार्ग भी प्रशस्त होगा। आज भारत प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है। बात आस्था की हो या विज्ञान की, बात शिक्षा की हो या संस्कार की, सेवा भाव की हो या सद्भावना की सभी आयामों में भारत अग्रणी स्थान पर है। जिस प्रकार से परिवार शिक्षा एवं संस्कार देने का कार्य करता है इस प्रकार से भारत संपूर्ण विश्व के लिए संस्कार देने का कार्य कर रहा है। महाकुम्भ इसका जीता-जागता उदाहरण है। 'वसुधैव कुटुंबकम्' एवं 'सर्वे भवंतु सुखिनः' जैसा लोक-कल्याणकारी एवं सार्वभौमिक संदेश भारत की संस्कृति में निहित है। हमारी संस्कृति हमारे देश की आत्मा की अभिव्यक्ति है। इसलिए भारत के ज्ञान भंडार में नए ज्ञान का सृजन करते हुए हम भावी पीढ़ी का नवनिर्माण करें यही हमारे जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। यह बात प्रतिबद्धता की है, देशभक्ति की है, आत्मनिर्भरता की है, परिश्रम की है, प्रतिभा की है, सामूहिकता की है, परिश्रम की पराकाष्ठा और अपनी मातृभूमि से प्रेम की है। यदि राष्ट्र के प्रति निष्ठाभाव के साथ हम प्रत्येक क्षेत्र में, प्रत्येक आयाम में इस प्रकार से आगे बढ़ने का प्रयास करेंगे तो वह दिन दूर नहीं जब हम अपनी आंखों के समक्ष ही भारत को पुनः विश्व गुरु बनते देखेंगे। विकसित भारत 2047 के सन्दर्भ में हम केवल भूतकाल की चर्चा न करें बल्कि भविष्य के नव निर्माण की बात करें। इसमें हम किस प्रकार से भावी पीढ़ी का मार्गदर्शन कर सकते हैं उसके बारे में, उस दिशा में योजनाबद्ध प्रयास करें। सामूहिकता की भावना और योजना के साथ इसका संकल्प लें तो हम अपने राष्ट्र को समृद्धिशाली बनाने में सहायक सिद्ध होंगे। भारतीय ज्ञान परंपरा और ज्ञान का यह सूर्य भारत के लिए ही नही बल्कि संपूर्ण विश्व के लिए अद्वितीय है। ज्ञान एक निरंतर प्रक्रिया है, ज्ञान जीवन का लक्ष्य है, जीवन का आलंबन है और इस सृष्टि को समझने की साधना है। ज्ञान की खोज ही मनुष्य के जीवन का शाश्वत सत्य है और भारत का अस्तित्व इसी ज्ञान तत्व की आराधना हेतु है। भारत का अर्थ ही है कि जो ज्ञान में रत हो वह भारत। अतः आइये! ज्ञान में रत भारत के प्रकाश से विश्व को आलोकित करने में हम अपने-अपने कार्यक्षेत्र में निष्ठापूर्वक, प्रतिबद्धता के साथ दृढ़ संकल्पित होकर अपना गिलहरी योगदान दें।

संपादक

ISSN No. 2581-3528

ज्ञान महाकुम्भ-2081

प्रयागराज महाकुम्भ के पावन अवसर पर 10 जनवरी से 09 फरवरी तक शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के तत्वावधान में ज्ञान महाकुम्भ का आयोजन भी किया गया, जिसमें देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपतियों, शैक्षिक संस्थानों के प्रतिनिधियों, शिक्षा क्षेत्र से जुड़े अनेक शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं शिक्षण संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने प्रतिभागिता की। ज्ञान महाकुम्भ के समापन सत्र में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह मा. दत्तात्रेय होसबाले जी ने उपस्थित प्रतिभागियों को संबोधित किया जिसे ज्ञान कुम्भ में उपस्थित डॉ. नीलम कुमारी जी एवं प्रो. (डॉ.) हरेन्द्र सिंह जी ने संकलित किया। प्रस्तुत है उद्बोधन का संकलित अंश -

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास द्वारा आयोजित ज्ञान महाकुंभ 2081 के समापन कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि इसरो के अध्यक्ष श्री सी. वी. नारायण जी, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के राष्ट्रीय सचिव श्री अतुल कोठारी जी, मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय तकनीकी संस्थान के प्रबंध निदेशक प्रो. आर. एस. वर्मा जी, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के पर्यावरण विषय के राष्ट्रीय संयोजक श्री संजय स्वामी जी, पूर्णेदु जी, राजेश्वर जी, सविता जी, इस सभागार में उपस्थित विद्वतजन, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के समस्त कार्यकर्ता, समाज प्रेमी बंधु एवं भगिनियों भाइयों एवं बहनों, श्री सी. वी. नारायण जी ने पूरे वातावरण को विद्युतीकृत कर दिया है। आपके प्रेरक शब्दों के माध्यम से आपने युवाओं यहां तक कि बड़ों को भी प्रेरित किया है। आपने बताया कि न केवल हमारे सपने साकार हो सकते हैं बल्कि हमें सपने देखना भी नहीं छोड़ना चाहिए। यहां उपस्थित सभी लोगों की ओर से मैं आपके प्रेरक और समृद्ध शब्दों के लिए हृदय से धन्यवाद देता हूं।

भारत में समस्याओ की कमी नहीं है लेकिन समस्याओं की ही चर्चा करते रहेंगे तो आगे बढ़ नहीं पाएंगे इसलिए शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के ध्येय वाक्यो में प्रमुख है, समस्या नहीं समाधान की चर्चा करें। यह इसरो के समस्त परिवार ने कर दिखाया है। इसरो के अध्यक्ष से लेकर, वैज्ञानिक समूह तक इसरो से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति ने देश को गर्व से चंद्रमा तक, मंगल तक ले जाने का कार्य किया।राष्ट्र को गौरवान्वित किया। शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास निरंतर शिक्षा क्षेत्र में परिवर्तन लाने के लिए संकल्पित है। भारत के भविष्य का निर्माण विद्यालय में होता है। अभी पूर्व में नारायण जी ने मूल्य आधारित शिक्षा, बौद्धिक शिक्षा का उल्लेख किया, इन दोनों की दृष्टि से वर्तमान भारत में क्या होना आवश्यक है? इसके लिए केवल सरकार से अपेक्षा न रखते हुए समाज प्रबोधन कार्य किया है। न्यास के द्वारा शिक्षकों, छात्रों, भारत के शिक्षाविदों, चिंतको सबको एक मंच पर लाकर इस विषय में समाधान क्या होना चाहिए? और आगे के लिए क्या हो सकता है? इसके लिए समय-समय पर मंथन किया है। इसलिए शिक्षण संस्था चलाने वाले, शिक्षा का प्रबंधन करने वाले संस्थान, व्यवसाय की दृष्टि से या सेवा भाव से संस्था को न चलाएं, बल्कि

ISSN No. 2581-3528

परिवर्तन लाने की भूमिका से संस्था को चलाएं। इसलिए हम क्या कर सकते हैं? इसके लिए भी उनके सामने विचार रखें। शिक्षा के द्वारा संस्कार चाहिए, इसके लिए संस्कार देने वाली, चरित्र निर्माण करने वाली, भारतीय भाषा, पर्यावरण संरक्षण का बोध कराने वाली शिक्षा पर चिंतन करने का प्रयास न्यास ने किया है। जहां-जहां आवश्यक है योग्य वातावरण बनाने का प्रयत्न किया है।

शैक्षिक वातावरण, शिक्षा और शिक्षा के क्षेत्र में काम करने वाले लोग, शिक्षा में परिवर्तन के राष्ट्रव्यापी आंदोलन में हम सब की सहभागिता होनी चाहिए। ऐसी जागृति लाने का योग्य उदाहरण न्यास ने प्रस्तुत किया है। संगठन की दृष्टि से राष्ट्र के निर्माण की दिशा में हम सभी अग्रसर होंगे ऐसा मेरा विश्वास है। शिक्षा संस्कृति न्यास ने ज्ञानोत्सव कार्यक्रम के माध्यम से पहले भी देश एवं समाज में शैक्षिक वातावरण निर्माण करने का कार्य किया है । इस परिपेक्ष में इसकी पृष्ठभूमि में हरिद्वार, नालंदा, पुडुचेरी और कर्णावती में ज्ञान महाकुम्भ में शिक्षा के क्षेत्र में चिंतन, मनन और मंथन करने का कार्य किया। ज्ञान कुम्भ की कल्पना अद्भुत है, सार्थक है। शिक्षा में परिवर्तन के लिए सभी लोगों का प्रयास होना चाहिए। शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तन लाना, संतुलन लाना यह शासन का ही कार्य नहीं है अपितु हम सबका सामूहिक दायित्व। न्यास ने कहा है कि देश को बदलना है तो शिक्षा को बदलना होगा। देश को आत्मनिर्भर बनाना है तो छात्रों को आत्मनिर्भर बनाना होगा। यानी प्रत्येक विषय को समझते हुए, गहराई से मंथन करते हुए प्रत्येक विषय को समाज के सामने रखने का प्रयास करना होगा। शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास ने इसी उद्देश्य से सभी को एक सूत्र में पिरोने का प्रयास किया है ताकि सभी कार्यकर्ता समाज में इस विषय को लेकर जाएं, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास का कार्य समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुंचे और ऐसे कार्यकर्ताओं का निर्माण हो सके जो यह कार्य करने में समर्थ और क्षमतावान हों। इस ज्ञान कुम्भ में आत्मनिर्भरता, भारतीय ज्ञान परंपरा, भारतीय शिक्षा जैसे विभिन्न विषयों पर मंथन किया गया है। हमारे संगठन का नाम शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास है। शिक्षा और संस्कृति को अलग-अलग नहीं किया जा सकता। शिक्षा से सम्बंधित तीन शब्द हैं रू ज्ञान, शिक्षा, और विद्या। अंग्रेजी में नॉलेज, एजुकेशन और लिटरेसी। इसका अर्थ भी भिन्न-भिन्न है। ज्ञान के लिए विद्यालय में बैठने की आवश्यकता नहीं है। ज्ञान, परीक्षा या अंकों से निर्धारित होने वाली बात नहीं है। ज्ञान एक निरंतर प्रक्रिया ,है ज्ञान जीवन का लक्ष्य है, ज्ञान जीवन का सहारा है, ज्ञान समग्र सृष्टि को समझने की तपस्या है, साधना है। भारतीय संस्कृति में हम मातृ-ऋण, देव-ऋण और ऋषि-ऋण का अनुपालन करते हैं। ज्ञान को सृजन करने वाला बताया गया है इसलिए ज्ञान के भंडार को प्रयास से, पर्यटन से, तपस्या से, साधना से, प्रयोग से और अवलोकन से आने वाली पीढ़ी को नए सृजन करते हुए देखा जाना चाहिए यही हमारी भारतीय ज्ञान परंपरा कहती है। भारतीय ज्ञान परंपरा इतिहास नहीं है, भारतीय ज्ञान परंपरा दो प्रकार के दायित्व से मिलकर बनी है। पहला, जो हमने प्राप्त किया है उसको समझना और सीखना और आत्मविश्वास को बढ़ाना, दूसरा जो पाठ है, जो मार्ग है उस मार्ग को नए ज्ञान से समृद्ध करते हुए आगे बढ़ना। इसीलिए भारतीय ज्ञान इतिहास नहीं बल्कि भारतीय ज्ञान परंपरा है। ज्ञान की परंपरा की व्यवस्था, विद्या, नॉलेज देने के लिए जो स्ट्रक्चर बने वह शिक्षा पद्धति है। ज्ञान सार्वभौमिक है ज्ञान सार्वत्रिक है। ज्ञान सरस्वती, काशी शिव है। ज्ञान संपूर्ण सृष्टि के लिए है जबकि शिक्षा राष्ट्रीय स्ट्रक्चर के लिए है। ज्ञान को देश की सभ्यता एवं संस्कृति के अनुरूप सिखाने हेतु शिक्षा प्रणाली है। ज्ञान सार्वभौमिक है और शिक्षा समाज की दृष्टि से प्रासंगिक है। ज्ञान को समाज की दृष्टि से प्रासंगिक बनाने के लिए, आचरण में लाने के लिए जो विभिन्न मार्ग विकसित होते हैं वह संस्कृति है क्योंकि संस्कृति ही राष्ट्र की आत्मा की अभिव्यक्ति है। भारत की आत्मा की अभिव्यक्ति कराने वाली 'संस्कृति' है इसीलिए न्यास में शिक्षा और संस्कृति के उत्थान की दृष्टि से जो विचार किया है उस दृष्टि से ज्ञान कुम्भ का अत्यधिक महत्व है।

भारत संक्रमण काल में खड़ा है और इसरो के वैज्ञानिकों ने अपने प्रारंभिक वर्षों में अपने कठिन समय में अद्भुत कार्य किया है। यह एक जोश है, जज्बा है और देश के मान को बढ़ाने के लिए एक लगन है। विज्ञान के क्षेत्र में ,अनुसंधान के क्षेत्र में, भारत किसी से पीछे नहीं रहे यह उनकी प्रतिबद्धता है, यह राष्ट्र भक्ति है जो उन्होंने कर दिखाया है। एक समय रूस ने भारत को क्रायोजेनिक इंजन देने से मना कर दिया था ऐसे में उस समय इसरो के अध्यक्ष सी. आर. राव देश के सॉफ्टवेयर इंजीनियरों से, युवा पीढ़ी से, उनके घर वालों से बात की, उनको समझाया कि आप केवल आर्थिक लाभ के लिए अमेरिका और जर्मनी जाना चाहते हैं लेकिन आप सभी से अनुरोध है कि आप देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए अपना-अपना योगदान दें। उन सभी इंजीनियरों ने इस आह्वान को स्वीकार किया और भारत की मिट्टी के ऋण को चुकाने के लिए उन नवयुवकों ने सुपर कंप्यूटर जिसे परम कंप्यूटर भी कहते है तैयार किया और दुनिया को बता दिया कि हम सुपर कंप्यूटर बनाने में किसी से कम नहीं हैं। आज भारत दुनिया में तीसरा देश है अमेरिका और जापान के बाद जो सुपर कंप्यूटर बना सकता है। यह प्रतिबद्धता की बात है, यह आत्मनिर्भरता की

ISSN No. 2581-3528

बात है, यह बात परिश्रम की है, यह बात प्रतिभा की है, यह बात सामूहिकता की है। इसरो ने इस प्रकार से सफलता पाई और अपने परिश्रम से देश में ही सामूहिकता का भाव जागृत करने का कार्य किया। देश के हर सेक्टर में, हर क्षेत्र में, हर आयाम में इस प्रकार आगे बढ़ाने के लिए यदि हम सभी प्रयास करेंगे तो भारत को हम न केवल विश्व गुरु बनाएंगे बल्कि भारत को परम वैभव पर ले जाने का स्वप्न साकार कर पाएंगे। विकसित भारत 2047 का संकल्प पूर्ण हो इसके लिए हम सबको प्रयत्न करना पड़ेगा।

भविष्य की आने वाली पीढ़ी के बारे में सोचो, भारत के नवनिर्माण के बारे में सोचो, भारत के विद्यार्थी, शिक्षक एवं अभिभावक सोचें कि भारत विश्व का सिरमौर किस प्रकार बने। इस बारे में सोचें कि हम कृषि के क्षेत्र में, वस्तु उद्योग के क्षेत्र में, ऑटोमोबाइल के क्षेत्र में दुनिया के सामने उदाहरण प्रस्तुत करें, अन्तरिक्ष के क्षेत्र में तो हम ऐसा कर ही रहे हैं। इसके लिए हमें परिश्रम की पराकाष्ठा तक जाना होगा और देश में शिक्षा का एक ऐसा वातावरण तैयार करना होगा जिसमें भावी पीढ़ी का निर्माण हो सके। वह समाज के लिए अपने जीवन को सार्थक बना सके, समाज और राष्ट्र को समृद्ध बना सके। हमारी वर्तमान पीढ़ी यह कार्य कर सकती है। न्यास का मानना है कि माँ, मातृभूमि और मातृभाषा का कोई विकल्प नहीं है, यह हमारा ध्येय वाक्य है। मातृ देवो भवः, पितृ देवो भवः और आचार्य देवो भवः का भाव हमारी सभ्यता एवं संस्कृति में निहित है।

मातृभाषा और मातृभूमि से प्रेम अगर किसी से सीखना है तो इजरायल से सीखो। लगभग 50 देश में बिखरे हुए यहूदियो ने संकल्प किया कि उन्हें अपनी मातृभूमि पर वापस लौटना है। हर पीढ़ी को उन्होंने बताया कि हमें वापस अपनी मातृभूमि पर जाना चाहिये। उन्होंने 1800 वर्षों के संघर्ष के साथ 50 देशो में बिखरे हुए लोगो इजराइल जाने का निश्चय किया। जो रेतीला देश था, चारों ओर दुश्मन थे, ऐसे में उन्होंने उस देश में जंगल खड़ा किया और हर एक विद्यार्थी को समझाया कि यह तुम्हारे पूर्वज हैं, आपको एक पौधा लगाना चाहिए और इसको बड़ा करने का दायित्व भी तुम्हारा है। इजराइल ने उदाहरण प्रस्तुत किया। हमारे देश के कृषि वैज्ञानिकों को भी इजराइल में कृषि सुधार को देखने जाना चाहिए। इसलिए मातृभूमि का कोई विकल्प नहीं है।

हमारे देश की मातृभाषाएं विश्व के किसी आश्चर्य से कम नहीं हैं। प्रत्येक भाषा में कहानी है, साहित्य है, संस्कृति है इसलिए अगली पीढ़ी को अपनी भाषा का ज्ञान, साहित्य का परिचय करना प्रत्येक माता-पिता का कार्य है।जैसे माँ अपना दूध पिलाकर बच्चों को बड़ा करती है, उसी प्रकार भाषा का ज्ञान देकर भी बच्चों को बड़ा कीजिए। जो मातृभाषा से छूट जाता है उसके जीवन मूल्यों में और संस्कृति में कमी आ जाती है इसलिए मातृभाषा नितांत आवश्यक है। एक प्रसंग है जब जर्मनी ने फ्रांस पर आधिपत्य जमाया और कानून बनाया कि वहां पर उनको जर्मन ही सीखनी है फ्रांसीसी नहीं सीखनी है तब एक दिन वहां पर जर्मनी की रानी एक विद्यालय में आई जिसमें उन्होंने एक बालिका को सम्मानित करते हुए बालिका से पूछा कि तुम्हें क्या चाहिए बालिका ने कहा कि मुझे मेरी भाषा लौटा दीजिए तब रानी ने आदेश निकाला कि यहां सभी को जर्मन सिखाई जाए। उस छोटी सी बच्ची ने रानी के सामने अपनी मातृभाषा का विषय रखा, यह बात सम्मान व प्रेम की नहीं बल्कि मातृभाषा को बचाने के लिए प्रयत्न की है।

इसलिए हमें हमारी मातृभाषा को बचाने की व्यवस्था करनी चाहिए। अकूत ज्ञान का भंडार हमारे पास है परंतु इसे समाज में प्रवाहित करने के लिए व्यवस्था होनी चाहिए। यह संस्था या सरकार की जिम्मेदारी नहीं है बल्कि हम सभी को अपनी-अपनी जिम्मेदारी निभानी पड़ेगी और हम सभी निभाएं इसलिए शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति लाने के लिए कृतसंकल्पित होने के लिए प्रयत्न करें। इस प्रयत्न में हम सभी सहभागी बनें। विश्व के देशों में कुछ लोग संस्कृति और मूल्यविहीन विकृत मानसिकता का जो काम कर रहे हैं जिसको 'वोकिज्म' कहते हैं जो हमारी संस्कृति की देन को नकारने का कार्य करते हैं, वह एक विकृत मानसिकता के तहत यह कार्य करते हैं। स्वयं के बोध के बारे में कई गलत धारणाएं विकसित करने का कार्य करते है। इसलिए वापेउ के विरुद्ध केवल बोलने से काम नहीं चलेगा, संस्कार एवं संस्कृति देने का कार्य, शैक्षिक वातावरण तैयार करने का काम परिवार एवं कुटुंब का होना चाहिए। ऐसा विचार करके अगली पीढ़ी को संस्कृति और संस्कार देने का कार्य करना होगा, व्यवस्था बनानी होगी इसलिए मित्रों शिक्षा उत्थान न्यास भारत के भविष्य के लिए महत्वपूर्ण पथ है, रोड मैप है। देश की समृद्धि के लिए किसी भी क्षेत्र में देश को अग्रसर होना है तो हम सबको शिक्षा क्षेत्र में भारत के ज्ञान भंडार को वर्तमान ज्ञान के अनुरूप विकसित करते हुए उसमे जोड़ने का कार्य करना चाहिए। महर्षि अरविंदो ने देश स्वाधीन होने से पूर्व एक संदेश दिया था कि देश जब स्वतंत्र होगा तो राजनीतिक दृष्टि से हमें अपने शासक व प्रशासक का चयन करना होगा यह बात ठीक है लेकिन देश के अंदर जो ज्ञान भंडार है वह बिखर गया है, गुरुकुल में, मंदिर में ,व्यावसायिक क्षेत्र में, साहित्य में, बुनकरों में शिल्पकारो में परंपराओं में स्मृतियों में, आचरण में इस बिखर गये ज्ञान को एकत्र करना होगा, डॉक्यूमेंटेशन करना होगा, हमारा ज्ञान भंडार को संजोना और समझाना पड़ेगा। न्यास इसी कार्य को किये जाने का एक प्रयास है। श्री अरविंदो तीन बातों पर बल दिया पहली कि जो ज्ञान है वह वर्तमान के लिए सार्थक बने, वर्तमान में उपयोगी सिद्ध हो, इस पर विचार करके जीवन में लागू करना होगा। दूसरी कि हमें हमारे ज्ञान का प्रयोग राष्ट्र के विकास हेतु करना होगा। तीसरी बात यह कि स्वाधीन भारत की पीढ़ियों से अपेक्षा है कि जो हमारे ज्ञान के भंडार है उसमें नए ज्ञान का सृजन करे। केवल पुराने ज्ञान का प्रयोग करने से काम नहीं चलेगा बल्कि नए ज्ञान का सृजन करने वाले लोगों से ही यह राष्ट्र समृद्धिशाली बनेगा। मैं समझता हूं कि हम ऐसे ज्ञानपिपासु, ज्ञान समाज का निर्माण करने वाले कर्मवीर साधक बनें। ज्ञान महाकुंभ का यह संदेश है कि इस विचार से संकल्पित होकर हम शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति लाने व कृति में लाने का कार्य करें। इसी भावना के साथ मैं अपनी वाणी को विराम देता हूं। सभी को नमस्कार।

■

ISSN No. 2581-3528

बसंतोत्सव एवं महाकुम्भ: वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक महत्व

डॉ. शिवा शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर अंग्रेजी विभाग
झम्मन लाल पी.जी. कॉलेज हसनपुर, अमरोहा

ब्रह्माजी ने देवी सरस्वती के प्रादुर्भाव के बाद उनसे वीणा बजाने का अनुरोध किया। जैसे ही देवी ने वीणा का मधुरनाद किया, चारों ओर ज्ञान और उत्सव का वातावरण हो गया, वेदमंत्र गूंज उठे। ऋषियों की अंत:चेतना उन स्वरों को सुनकर झूम उठी। ज्ञान की जो लहरियां व्याप्त हुईं, उनको ऋषिचेतना ने संचित कर लिया। इसी दिन को बंसत पंचमी के रूप में मनाया जाता है।

बसंत प्रकृति एवं मानव मन के संयोग का सुंदर पर्व है। प्रकृति अपने समस्त श्रृंगार के साथ वसंत का अभिनंदन करती है। सुरभित आम के बौर और कोयल की कूक से बसंत के आगमन का संदेश प्रसारित होता है। इस संदेश से मानव मन भी पुलकित एवं उल्लासित हो उठता है। बसंत मन में नव उमंग व हृदय में सजल भाव को जगाता है। नई आशाओं एवं कामनाओं को जन्म देता है। संभवतः इन्हीं सब कामनाओं को परिष्कृत और उदात्त करने के लिए सरस्वती पूजन की परंपरा प्रचलित हुई है।

पौराणिक कथा कहती है कि हिन्दू कैलंडर के अनुसार माघ मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को देवी सरस्वती का प्राकट्य दिवस मनाया जाता है। सृष्टि की रचना के समय ब्रह्माजी ने अनुभव किया कि जीवों के सृजन के बाद भी चारों ओर मौन छाया रहता है। उन्होंने विष्णुजी से अनुमति लेकर अपने कमंडल से जल छिड़का, जिससे पृथ्वी पर एक अद्भुत शक्ति प्रकट हुई। छह भुजाओं वाली इस शक्ति के एक हाथ में पुस्तक, दूसरे में पुष्प, तीसरे और चौथे हाथ में कमंडल और बाकी दो हाथों में वीणा और माला थीं। ब्रह्माजी ने देवी सरस्वती के प्रादुर्भाव के बाद उनसे वीणा बजाने का अनुरोध किया। जैसे ही देवी ने वीणा का मधुरनाद किया, चारों ओर ज्ञान और उत्सव का वातावरण हो गया, वेदमंत्र गूंज उठे। ऋषियों की अंतःचेतना उन

ISSN No. 2581-3528

स्वरों को सुनकर झूम उठीं। ज्ञान की जो लहरियां व्याप्त हुईं, उनको ऋषिचेतना ने संचित कर लिया। इसी दिन को बंसत पंचमी के रूप में मनाया जाता है।

बसंत पंचमी पर्व का धार्मिक एवं वैज्ञानिक महत्व : सादगी और निर्मलता को दर्शाता है पीला रंग, हर रंग की अपनी विशेषता है जो हमारे जीवन पर गहरा असर डालती है। हिन्दू धर्म में पीले रंग को शुभ माना गया है। पीला रंग शुद्ध और सात्विक प्रवृत्ति का प्रतीक माना जाता है। यह शुभत्व, सादगी और निर्मलता को भी दर्शाता है।

आत्मा से जोड़ने वाला रंग: फेंगशुई ने भी इसे आत्मिक रंग अर्थात आत्मा या अध्यात्म से जोड़ने वाला रंग बताया है। फेंगशुई के सिद्धांत ऊर्जा पर आधारित हैं। पीला रंग सूर्य के प्रकाश का है यानी यह ऊष्मा शक्ति का प्रतीक है। पीला रंग हमें तारतम्यता, संतुलन, पूर्णता और एकाग्रता प्रदान करता है।

सक्रिय होता है दिमाग: मान्यता है कि यह रंग डिप्रेशन दूर करने में कारगर है। यह उत्साह बढ़ाता है और दिमाग सक्रिय करता है। नतीजतन दिमांग में उठने वाली तरंगें खुशी का अहसास करातीं हैं। हम पीले परिधान पहनते हैं तो सूर्य की किरणें प्रत्यक्ष रूप से दिमाग पर असर डालतीं हैं।

बसंत का पीला रंग समृद्धि, ऊर्जा, प्रकाश और आशा का प्रतीक है। इसलिए इस दिन पीले रंग के कपड़े पहनते हैं, व्यंजन बनाते हैं।

कालिदास ऋतुसंहार में कहते हैं-

द्रुमा सपुष्पाः सलिलं सपदम स्त्रियः
सकामाः पवनः सुगन्धिः
सुखाः प्रदोषाः दिवसाश्च रम्याः, सर्व प्रिये
चारूतरं वसन्ते।।
वापीजलानां मणिमेखलानां शशाङ्कभासां
प्रमदाजनानाम् ।चूत्रुमाणां कुसुमान्वितानां
ददाति सौभाग्यमयं वसंतः।।

अर्थात्

ऐसी मनभावन ऋतु आई
वृक्षों की हर डाली डाली पुष्पित है प्रमुदित है मन में
प्रफुल्लित हैं पद्म हर एक जलाशय में
और प्रवाहित है सुगन्धित पवन हर दिशा दिशा में
दिवस सुरम्य !सुखकर सन्ध्या
ऐसा चारूतर है वसन्त तभी तो प्रिय है सभी को..हर
ओर एक आकर्षण / एक सम्मोहन
पहल से भी कहीं अधिक
जलाशयों के ठहरे हुए जल को/ मणिखचित मेखलाओं
को / कंगनों को
चन्द्रमा की चन्द्रिका को सुकुमारियों की सुकुमारता को
और पुष्पाभूषणों से आभूषित आम्रवृक्षों को
दिया है दान सौन्दर्य का / सौभाग्य का
इसी वसन्त ने तो...
तभी तो है इतना मोहक और आकर्षक...

ग्रहों की स्थिति का न केवल आध्यात्मिक महत्व है, बल्कि वैज्ञानिक दृष्टि से यह पृथ्वी और मानव पर पड़ने वाले प्रभावों को भी दर्शाती है। गुरु, सूर्य और चंद्रमा का विशेष संयोग पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र को प्रभावित करता है। इन खगोलीय संयोगों के दौरान कुम्भ में स्नान का महत्व अध्यात्म और विज्ञान का समन्वय है।

वर्तमान में प्रयागराज में चल रहा कुम्भ मेला कई शताब्दियों से मनाया जाता है। कुम्भ मेला बेहद पवित्र और धार्मिक मेला है और भारत के साधुओं और संतों के लिए विशेष महत्व रखता है। वे वास्तव में पवित्र नदी के जल में स्नान करने वाले पहले व्यक्ति होते हैं। विभिन्न अखाड़ों से संबंधित साधु–सन्यासी बड़ी संख्या में यहां आते हैं। घाटों की ओर जाते समय जब वे भजन, प्रार्थना और मंत्र गाते हैं, तो उनका जुलूस देखने लायक होता है।

कुम्भ मूल शब्द कुम्भक (अमृत का पवित्र घड़ा) से आया है। ऋग्वेद में कुम्भ और उससे जुड़े स्नान का उल्लेख है। इसमें इस अवधि के दौरान संगम में स्नान करने से लाभ, नकारात्मक प्रभावों के उन्मूलन तथा मन और आत्मा के कायाकल्प की बात कही गई है। अथर्वेद और यजुर्वेद में भी कुम्भ के लिए प्रार्थना लिखी गई है। इसमें बताया गया है कि कैसे देवताओं और राक्षसों के बीच समुद्र मंथन से निकले अमृत के पवित्र घड़े (कुम्भ) को लेकर युद्ध हुआ। ऐसा माना जाता है कि भगवान विष्णु ने मोहिनी का रूप धारण कर कुम्भ को लालची राक्षसों के चंगुल से छुड़ाया था। जब वह इसे लेकर स्वर्ग की ओर लेकर भागे तो अमृत की कुछ बूंदे चार पवित्र स्थलों पर गिरीं जिन्हें हम आज हरिद्वार, उज्जैन, नासिक और प्रयागराज के नाम से जानते हैं। इन्हें चार स्थलों पर प्रत्येक तीन वर्ष पर बारी–बारी से कुम्भ मेले का आयोजन किया जाता है।

महाकुम्भ केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं है, बल्कि यह प्राचीन भारत की गहन वैज्ञानिक और खगोलीय समझ का प्रतीक है। यह मेला हमें सिखाता है कि आस्था और विज्ञान के बीच कोई विभाजन नहीं है, बल्कि ये दोनों मिलकर मानवता के लिए मार्गदर्शक बनते हैं।

विज्ञान और अध्यात्म का संगम : ग्रहों की स्थिति का न केवल आध्यात्मिक महत्व है, बल्कि वैज्ञानिक दृष्टि से यह पृथ्वी और मानव पर पड़ने वाले प्रभावों को भी दर्शाती है। गुरु, सूर्य और चंद्रमा का विशेष संयोग पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र को प्रभावित करता है। इन खगोलीय संयोगों के दौरान कुम्भ में स्नान का महत्व अध्यात्म और विज्ञान का समन्वय है।

कुम्भ का जियोग्राफिकल महत्व : कुम्भ मेला आयोजन स्थलों का चयन भू–चुंबकीय ऊर्जा के आधार पर किया गया है। ये स्थान, विशेषकर नदी संगम क्षेत्र, आध्यात्मिक विकास के लिए अनुकूल माने गए हैं। प्राचीन ऋषियों ने इन स्थानों पर ध्यान, योग और आत्मिक उन्नति के लिए उपयुक्त ऊर्जा प्रवाह का अनुभव किया और इन्हें पवित्र घोषित किया था। ■

ISSN No. 2581-3528

आवरण कथा

भारत की अंतरिक्ष उड़ान का शतक :NVS-02

मानस वर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र
महाराजा अग्रसेन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) ने हाल हीं में NVS-02 नेविगेशन सैटेलाइट को सफलतापूर्वक लॉन्च करके एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। यह प्रक्षेपण श्रीहरिकोटा से ISRO का 100वां लॉन्च था, जो भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम के लिए एक ऐतिहासिक क्षण है। यह लेख NVS-02 की विशेषताओं, उद्देश्यों, संभावित प्रभावों, चुनौतियों और नीतिगत सुझावों पर चर्चा करने का प्रयास है।

NVS-02 एक नई दिशा : NVS-02, भारत की स्वदेशी नेविगेशन प्रणाली नाविक (NavIC) (Navigation with Indian Constellation) का हिस्सा है। यह दूसरी पीढ़ी का उपग्रह है, जो अधिक सटीक और भरोसेमंद नेविगेशन सेवाएं प्रदान करने के लिए डिजाइन किया गया है। यह L1, L5 और S बैंड में सिग्नल प्रसारित करता है, जिससे उपयोगकर्ताओं को बेहतर सटीकता और कनेक्टिविटी मिलती है। NVS-02 में स्वदेशी रूप से विकसित परमाणु घड़ी का भी उपयोग किया गया है, जो इसकी सटीकता को और बढ़ाता है।

> **NVS-02 का प्राथमिक उद्देश्य नाविक प्रणाली को सशक्त करना और इसे अधिक विश्वसनीय बनाना है। नाविक, भारत की अपनी स्वतंत्र नेविगेशन प्रणाली है, जो GPS जैसे वैश्विक नेविगेशन सिस्टम पर निर्भरता को कम करती है। इसका उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में किया जा सकता है, जैसे कि परिवहन, आपदा प्रबंधन और सुरक्षा। NVS-02 के प्रक्षेपण के साथ, नाविक की क्षमता और भी बढ़ेगी, जिससे उपयोगकर्ताओं को बेहतर सेवाएं मिल सकेंगी।**

उद्देश्य : नाविक को सशक्त बनाना : NVS-02 का प्राथमिक उद्देश्य नाविक प्रणाली को सशक्त करना और इसे अधिक विश्वसनीय बनाना है। नाविक, भारत की अपनी स्वतंत्र नेविगेशन प्रणाली है, जो GPS जैसे वैश्विक नेविगेशन सिस्टम पर निर्भरता को कम करती है। इसका उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में किया जा सकता है, जैसे कि परिवहन, आपदा प्रबंधन और सुरक्षा। NVS-02 के प्रक्षेपण के साथ, नाविक की क्षमता और भी बढ़ेगी, जिससे उपयोगकर्ताओं को बेहतर सेवाएं मिल सकेंगी।

भविष्य के परिणाम : अधिक सटीक नेविगेशन : NVS-02 के उन्नत सिग्नल और परमाणु घड़ी नाविक की सटीकता को काफी बढ़ाएंगे, जिससे उपयोगकर्ताओं को अधिक सटीक और विश्वसनीय नेविगेशन सेवाएं मिल सकेंगी।

बेहतर कनेक्टिविटी : L1, L5 और S बैंड में सिग्नल ट्रांसमिशन से विभिन्न क्षेत्रों में कनेक्टिविटी में सुधार होगा, खासकर दूरदराज और दुर्गम क्षेत्रों में।

आत्मनिर्भरता : नाविक के विकास से भारत की वैश्विक नेविगेशन सिस्टम पर निर्भरता कम होगी, जिससे देश की रणनीतिक स्वायत्तता

ISSN No. 2581-3528

बढ़ेगी।

संभावित क्षेत्र : विकास के नए आयाम : NVS-02 और नाविक प्रणाली के विकास से कई क्षेत्रों को बढ़ावा मिल सकता है, जिनमें शामिल हैं।

परिवहन : सटीक नेविगेशन से सड़क, रेल और हवाई परिवहन में दक्षता बढ़ेगी, जिससे यात्रा सुरक्षित और अधिक सुविधाजनक होगी।

आपदा प्रबंधन : आपदाओं के दौरान बचाव और राहत कार्यों में नाविक की मदद से बेहतर समन्वय और योजना बनाई जा सकेगी।

सुरक्षा : नाविक का उपयोग सीमा सुरक्षा, निगरानी और अन्य सुरक्षा संबंधी कार्यों में किया जा सकता है।

कृषि : सटीक स्थिति जानकारी से फसलों की निगरानी, सिंचाई प्रबंधन और अन्य कृषि गतिविधियों में सुधार हो सकता है।

भू-स्थानिक अनुप्रयोग : नाविक का उपयोग मानचित्रण, सर्वेक्षण और अन्य भू-स्थानिक अनुप्रयोगों में किया जा सकता है।

चुनौतियां : राह की मुश्किलें : NVS-02 और नाविक प्रणाली के विकास में कुछ चुनौतियां भी हैं, जिन पर ध्यान देना आवश्यक है।

तकनीकी चुनौतियां: उपग्रहों का निर्माण और संचालन एक जटिल प्रक्रिया है, जिसमें तकनीकी चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है।

रख-रखाव : उपग्रहों को नियमित रख-रखाव की आवश्यकता होती है, जिसके लिए पर्याप्त संसाधनों और विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है।

वैश्विक प्रतिस्पर्धा : GPS और ग्लोनास जैसे वैश्विक नेविगेशन सिस्टम से प्रतिस्पर्धा एक चुनौती है।

लागत : अंतरिक्ष कार्यक्रम में भारी लागत आती है, जिसके लिए निरंतर निवेश की आवश्यकता होती है।

नीतिगत सुझाव : भविष्य की राह : NVS-02 और नाविक प्रणाली की सफलता सुनिश्चित करने के लिए कुछ नीतिगत सुझाव।

NVS-02 का सफल प्रक्षेपण भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। यह नाविक प्रणाली को मजबूत करने और देश को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। हालांकि, कुछ चुनौतियां हैं, जिन पर ध्यान देना आवश्यक है। यदि इन चुनौतियों का सफलतापूर्वक समाधान किया जाता है, तो NVS-02 और नाविक प्रणाली भारत के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है।

निरंतर निवेश : अंतरिक्ष कार्यक्रम में निरंतर निवेश सुनिश्चित करना आवश्यक है ताकि अनुसंधान और विकास को बढ़ावा दिया जा सके।

अंतर्राष्ट्रीय सहयोग : अन्य देशों के साथ अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग को बढ़ावा देना चाहिए।

निजी क्षेत्र की भागीदारी : अंतरिक्ष कार्यक्रम में निजी क्षेत्र की भागीदारी को प्रोत्साहित करना चाहिए।

मानव संसाधन विकास : अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में प्रशिक्षित वैज्ञानिकों और इंजीनियरों को तैयार करने के लिए शिक्षण और प्रशिक्षण कार्यक्रमों को बढ़ावा देना चाहिए।

निष्कर्ष : अंतरिक्ष में भारत की उड़ान NVS-02 का सफल प्रक्षेपण भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। यह नाविक प्रणाली को मजबूत करने और देश को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। हालांकि, कुछ चुनौतियां हैं, जिन पर ध्यान देना आवश्यक है। यदि इन चुनौतियों का सफलतापूर्वक समाधान किया जाता है, तो NVS-02 और नाविक प्रणाली भारत के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है। यह प्रक्षेपण भारत की अंतरिक्ष यात्रा का एक महत्वपूर्ण पड़ाव है और भविष्य में भी ISRO से ऐसे ही सफल प्रक्षेपणों की उम्मीद है। भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम न केवल तकनीकी विकास को बढ़ावा देता है, बल्कि देश के युवाओं को विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में करियर बनाने के लिए भी प्रेरित करता है। यह भारत के आत्मविश्वास और गौरव का प्रतीक है और भविष्य में भी देश को नई ऊंचाइयों पर ले जाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहेगा।

स्रोत : भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन

ISSN No. 2581-3528

कुटुंब प्रबोधन : संस्कारों से सशक्त होता परिवार

मीनू वर्मा
अध्यापिका, गौतम बुद्ध नगर, उ.प्र.

धामपुर में एक छोटी गली में आपको एक हवेलीनुमा घर नज़र आएगा, जो वर्मा परिवार का आशियाना है। इस परिवार के 20 सदस्य एक साथ, एक ही छत के नीचे रहते हैं। सबसे छोटे सदस्य की उम्र सात वर्ष है और वह उस घर में रहता है जिसकी नींव उसके पर-परदादा ने रखी थी। कल्पना कीजिए, दादा के दादा का बनाया घर और उसमें आज उनके परपोते खेल रहे हैं! ये नजारा अपने आप में कितना अद्भुत है।

क्या आपने कभी ऐसे परिवार के बारे में सुना है जिसमें 20 सदस्य एक साथ रहते हों और उनके बीच अटूट एकता का बंधन हो? शायद नहीं! आजकल के समाज में, जहां एकल परिवार का चलन बढ़ गया है, ऐसे संयुक्त परिवार का मिलना वाकई दुर्लभ है। भारत में आज भी ऐसे अनेक परिवार हैं जो हजारो वर्ष प्राचीन भारत की कुटुंब परम्परा को संरक्षित रखे हुए हैं। ऐसा ही एक परिवार है उत्तर प्रदेश के बिजनौर जिले के धामपुर का वर्मा परिवार। एक ऐसा परिवार जो एकता का उदाहरण प्रस्तुत करता है और हमें कुटुंब के महत्व का अहसास कराता है।

धामपुर में एक छोटी गली में आपको एक हवेलीनुमा घर नज़र आएगा, जो वर्मा परिवार का आशियाना है। इस हवेली की दीवारों में कई पीढ़ियों की यादें बसी हैं। यहां की सबसे खास बात यह है कि इस परिवार के 20 सदस्य एक साथ, एक ही छत के नीचे रहते हैं। सबसे छोटे सदस्य की उम्र सात वर्ष है और वह उस घर में रहता है जिसकी नींव उसके पर-परदादा ने रखी थी। कल्पना कीजिए, दादा के दादा का बनाया घर और उसमें आज उनके परपोते खेल रहे हैं। ये नज़ारा अपने आप में कितना अद्भुत है!

अब आप सोच रहे होंगे कि इतने बड़े परिवार में सब एक साथ कैसे रहते होंगे? क्या कभी झगड़े नहीं होते? अलग-अलग विचारों और पसंद-नापसंद के बावजूद सब में इतनी एकता कैसे है? यही तो इस परिवार की खासियत है। उनके बीच का रिश्ता इतना गहरा है कि छोटी-छोटी बातों पर होने वाले मनमुटाव पल भर में दूर हो जाते हैं। यहां किसी भी प्रकार का झगड़ा या विवाद देखने को नहीं मिलता। आजकल के जमाने में, जहां छोटी-छोटी बातों पर परिवार टूट जाते हैं, वर्मा परिवार का यह सामंजस्य और एकता देखकर आश्चर्य होता है और मन में कई सवाल उठते हैं।

इस परिवार की सबसे बड़ी ताकत है उनकी एकता। जब कभी कोई परेशानी आती है, तो सब मिलकर उसका सामना करते हैं। जैसे एक मजबूत दीवार तूफ़ान का रुख मोड़ देती है, वैसे ही यह परिवार एकता की शक्ति से हर मुश्किल को हरा देता है। दुख की घड़ी में सब एक-दूसरे का सहारा बनते हैं और पलक झपकते ही मुश्किल हल हो जाती है। क्या ये कोई जादू है? नहीं, ये सिर्फ और सिर्फ आपसी प्रेम और समझ का नतीजा है।

और जब खुशियों का मौका आता है, तो इस परिवार का आनंद दोगुना हो जाता है। किसी एक सदस्य की सफलता या खुशी, पूरे परिवार के लिए उत्सव का कारण बन जाती है। हर चेहरे पर मुस्कान और आँखों में चमक दिखाई देती है। ऐसा लगता है जैसे बीस लोगों की खुशियां मिलकर एक महासागर बन गई हों। क्या आपके आस-पड़ोस में भी ऐसा नज़ारा देखने को मिलता है? शायद नहीं! इसीलिए वर्मा परिवार की कहानी इतनी खास है।

वर्मा परिवार की कहानी सिर्फ एक कहानी नहीं है, यह एक सीख है, एक प्रेरणा है। यह हमें सिखाती है कि कुटुंब का महत्व क्या होता है और एकता में कितनी शक्ति होती है। यह परिवार हमें याद दिलाता है कि रिश्तों की डोर कितनी नाजुक होती है और इसे कितने प्यार और समझदारी से संजोकर रखना चाहिए। क्या हम इस सीख को अपने जीवन में अपना सकते हैं?

आजकल के एकल परिवारों में, जहां हर कोई अपने में व्यस्त है, वर्मा परिवार की एकता एक अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करती है। यह हमें उम्मीद की एक नई किरण दिखाती है। यह हमें बताती है कि अभी भी प्रेम, त्याग और समर्पण के बल पर एक मजबूत और खुशहाल परिवार का निर्माण किया जा सकता है। कुटुंब प्रबोधन का यही सच्चा अर्थ है। तो चलिए, आज हम सब मिलकर ये संकल्प लेते हैं कि अपने परिवारों को भी वर्मा परिवार की तरह एकजुट और खुशहाल बनाएंगे। ■

ISSN No. 2581-3528

पुस्तक समीक्षा

स्वामी विवेकानंद का 'हिन्दू चिंतन'

भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण काल में अनेक प्राचीन ग्रंथों के अध्ययन की ओर लोगों की रुचि बढ़ी है, इसी के साथ अब भारतीय धर्म-संस्कृति और सामाजिक जीवन से सम्बंधित नया लेखन भी हो रहा है। प्रत्येक भारतीय को भारत बोध के लिए अपने महापुरुषों के विचारों से परिचित होना अनिवार्य है। इस दृष्टि से डॉ. राजकुमार उपाध्याय 'मणि' द्वारा सम्पादित पुस्तक 'स्वामी विवेकानंद का हिन्दू चिंतन' बहुत उपयोगी है। यह पुस्तक हमें स्वामी विवेकानंद के हिन्दू चिन्तन को समझने में सहायक सिद्ध होगी।

स्वामी विवेकानंद का हिन्दू चिंतन' एक ऐसी पुस्तक है जो उनके विचारों, दर्शन और हिन्दू धर्म को लेकर उनकी व्याख्याओं को प्रस्तुत करती है। यह पुस्तक स्वामीजी के व्याख्यानों, लेखों और संवादों का एक संकलन है, जिसमें वे हिन्दू धर्म की व्यापकता, आध्यात्मिकता, सामाजिक सुधार और वैज्ञानिक सोच को उजागर करते हैं।

मुख्य विषयवस्तु -

वेदांत और हिन्दू धर्म :

♦ स्वामी विवेकानंद वेदांत को हिन्दू धर्म का आधार मानते थे। वे इसे केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि जीवन जीने का एक तरीका बताते हैं।

♦ उनका मानना था कि हिन्दू धर्म केवल कर्मकांड और रूढ़ियों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आत्म–साक्षात्कार और सर्वव्यापी चेतना को समझने का मार्ग है।

सर्वधर्म समभाव और सहिष्णुता:

♦ उनके विचारों में हिन्दू धर्म की विशेषता इसकी सहिष्णुता और सभी के प्रति सम्मान में है।

♦ शिकागो धर्म संसद (1893) में उनके ऐतिहासिक भाषण में उन्होंने हिन्दू धर्म की इस समावेशी भावना को पूरे विश्व के सामने रखा।

हिन्दू समाज और सामाजिक सुधार :

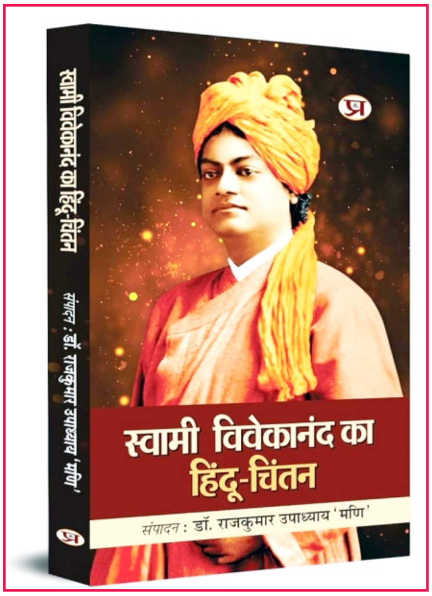

♦ स्वामी विवेकानंद ने समाज में व्याप्त जातिवाद और छुआ–छूत जैसी बुराइयों का विरोध किया।

♦ वे मानते थे कि हिन्दू धर्म की वास्तविक शक्ति इसके लोगों की एकता और कर्म में निहित है, न कि जाति या परंपरागत ऊँच–नीच की भावना में।

युवा और राष्ट्र निर्माण :

♦ स्वामी विवेकानंद ने हिन्दू युवाओं को कर्म, योग और आत्मनिर्भरता का संदेश दिया।

♦ वे कहते थे – 'उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।'

♦ उनका हिन्दू चिंतन केवल धार्मिक नहीं, बल्कि राष्ट्रीयता और सामाजिक उत्थान से भी जुड़ा था।

आधुनिकता और विज्ञान :

♦ वे धर्म और विज्ञान को परस्पर विरोधी नहीं मानते थे।

♦ उनका विचार था कि हिन्दू धर्म वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाकर अधिक प्रभावशाली बन सकता है।

पुस्तक का प्रभाव : यह पुस्तक उन लोगों के लिए उपयोगी है जो हिन्दू धर्म को विवेकानंद की दृष्टि से समझना चाहते हैं। यह न केवल धार्मिक बल्कि दार्शनिक और व्यावहारिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है। इसमें उनके विचारों को सरल भाषा में प्रस्तुत किया गया है, जिससे पाठक उनके चिंतन को आसानी से आत्मसात कर सकते हैं।

निष्कर्ष : 'स्वामी विवेकानंद का हिन्दू चिंतन' केवल धर्म पर चर्चा करने वाली पुस्तक नहीं है, बल्कि यह जीवन, समाज और राष्ट्र निर्माण के व्यापक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती है। उनका हिन्दू चिंतन, मानवता और आत्म–शक्ति को केंद्र में रखता है। यह पुस्तक प्रत्येक उस व्यक्ति के लिए आवश्यक है जो हिन्दू धर्म की मूल आत्मा को समझना चाहता है।

–समीक्षक : विदुला कौशिक ■

ISSN No. 2581-3528

नोएडा की चर्चा 'ग्रीन वॉरियर' शैल माथुर के साथ

धीरज त्रिपाठी
स्वतंत्र टिप्पणीकार

नोएडा निवासी वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता शैल माथुर जी के साथ "पॉलीथीन बहिष्कार" की उनकी मुहीम को लेकर केशव संवाद टीम के सदस्य धीरज त्रिपाठी ने चर्चा की, प्रस्तुत हैं उनके साथ हुई चर्चा के सम्पादित अंश-

हमने स्थानीय बाजारों, स्कूलों और रेजिडेंशियल कॉलोनियों में जाकर लोगों को पॉलीथीन के नुकसान के बारे में जागरूक करना शुरू किया। नोएडा सेक्टर 55-56 के अलग-अलग हिस्सों में जाकर दुकानदारों और ग्राहकों से बात की। खोड़ा के एस. ई. बाल विद्या मंदिर में बच्चों के लिए वर्कशॉप आयोजित की, ताकि वे अपने परिवारों को भी जागरूक कर सकें। वैकल्पिक समाधान प्रस्तुत किए, लोगों को कपड़े, जूट और कागज के थैलों का उपयोग करने के लिए प्रेरित किया।

आपको "पॉलीथीन बहिष्कार" अभियान शुरू करने की प्रेरणा कहां से मिली?

इस अभियान की प्रेरणा मुझे तब मिली जब मैंने अपने शहर नोएडा सेक्टर 55–56 और आस–पास के क्षेत्रों में प्लास्टिक कचरे का बढ़ता हुआ प्रभाव देखा। लोग छोटे कार्यक्रमों में भी डिस्पोजल का ढेर लगा देते हैं। पत्तल, ग्लास और दोने के नाम पर कूड़े का ढेर लग जाता है। प्लास्टिक बैग न केवल पर्यावरण को नुकसान पहुंचा रहे थे, बल्कि जल स्रोतों को भी प्रदूषित कर रहे थे। कई बार देखा कि गाय और अन्य जानवर गलती से प्लास्टिक खा लेते हैं, जिससे उनकी मृत्यु हो जाती है।

इसके अलावा, जब मैंने विभिन्न शोध पढ़े और विशेषज्ञों से बातचीत की, तो यह स्पष्ट हुआ कि पॉलीथीन बैग का सही से निपटान न होने से मिट्टी की उर्वरता कम हो रही है और जलवायु परिवर्तन पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। इन सब कारणों से मैंने यह निर्णय लिया कि लोगों को जागरूक करना और एक ठोस अभियान चलाना जरूरी है, जिससे हम प्लास्टिक के बजाय वैकल्पिक, पर्यावरण–अनुकूल विकल्पों को बढ़ावा दे सकें।

"पॉलीथीन बैग एक्जिट" अभियान की शुरुआत कैसे हुई और इसमें मुख्य चुनौतियाँ क्या रहीं?

पॉलीथीन बैग एक्जिट अभियान की शुरुआत छोटे स्तर से की गई। सबसे पहले, हमने स्थानीय बाजारों, स्कूलों और रेजिडेंशियल कॉलोनियों में जाकर लोगों को पॉलीथीन के नुकसान के बारे में जागरूक करना शुरू किया। नोएडा सेक्टर 55–56 के अलग–अलग हिस्सों में जाकर दुकानदारों और ग्राहकों से बात की। खोड़ा के एस. ई. बाल विद्या मंदिर में बच्चों के लिए वर्कशॉप आयोजित की, ताकि वे अपने परिवारों को भी जागरूक कर सकें। वैकल्पिक समाधान प्रस्तुत किए, लोगों को कपड़े, जूट और कागज के थैलों का उपयोग करने के लिए प्रेरित किया।

मुख्य चुनौतियां: पहली चुनौती थी लोगों की आदतें बदलना, कई लोग पॉलीथीन का उपयोग छोड़ने को तैयार नहीं थे, क्योंकि वे इसे सुविधाजनक मानते थे। दुकानदारों को बार–बार समझाना पड़ा कि वे ग्राहकों को प्लास्टिक बैग न दें। दूसरी चुनौती थी सस्ता और टिकाऊ विकल्प उपलब्ध कराना, पॉलीथीन बैग सस्ते होते हैं, जबकि कपड़े या जूट के बैग मेहंगे। वेंडर इसे छोड़ने के लिए तैयार नहीं थे, क्योंकि उन्हें कोई सस्ता विकल्प

ISSN No. 2581-3528

नहीं मिल रहा था।

इस अभियान में स्थानीय जनता और प्रशासन की प्रतिक्रिया कैसी थी?

स्थानीय जनता की प्रतिक्रिया मिली-जुली रही। कुछ लोग इस बदलाव को तुरंत स्वीकार करने को तैयार थे, जबकि कुछ को समझाने और बार-बार प्रेरित करने की जरूरत पड़ी। हमने बच्चों के माध्यम से और उनके परिवार के सहयोग से पुराने अखबार के थैले बनाकर दुकानदारों को दिये और उसी में सामान बेचने का आग्रह किया। कई परिवारों और महिलाओं ने कपड़े के थैलों का इस्तेमाल शुरू कर दिया और वे दूसरों को भी जागरूक करने लगे।

नकारात्मक प्रतिक्रियाएं और चुनौतियां : छोटे दुकानदारों और स्ट्रीट वेंडर्स ने शुरुआत में इस फैसले का विरोध किया, क्योंकि पॉलीथीन बैग सस्ते थे और ग्राहक अक्सर मुफ्त में बैग मांगते थे। कुछ ग्राहक यह मानने को तैयार नहीं थे कि कपड़े या जूट के बैग खरीदना जरूरी है, क्योंकि वे हमेशा मुफ्त में पॉलीथीन बैग के आदी थे।

प्रशासन की प्रतिक्रिया : स्थानीय प्रशासन ने इस अभियान का समर्थन किया और कई जगहों पर पॉलीथीन प्रतिबंध के नियम लागू किए। हालांकि कई जगहों पर प्रशासनिक नियम लागू होने के बावजूद लोग चोरी-छिपे पॉलीथीन का इस्तेमाल करते रहे। जुर्माने की व्यवस्था तो की गई, लेकिन सभी जगहों पर इसे सख्ती से लागू नहीं किया जा सका।

समाज के युवाओं को आप क्या संदेश देना चाहेंगे?

लोगों से बात करने पर यह महसूस हुआ कि एक लीटर पानी की बोतल बनाने में लगभग साढ़े तीन लीटर पानी की खपत होती है। यह अपने आप में एक चिंताजनक तथ्य है, जिसे हमें गंभीरता से समझना होगा। जहां ये बोतलें बनाई जाती हैं, वहां उच्च तापमान वाली फैक्ट्रियां होती हैं, जिनमें ठंडक के लिए कूलर और भारी मात्रा में पानी का उपयोग किया जाता है। इस उत्पादन प्रक्रिया में पानी की काफी बर्बादी होती है, जो हमारे जल संसाधनों पर अनावश्यक दबाव डालती है।

क्या आप हमें अपने प्रयासों से प्राप्त किसी सफलता की कहानी या महत्त्वपूर्ण घटना का उल्लेख कर सकती हैं ?

कुछ दिन पूर्व नोएडा स्टेडियम में श्री लक्ष्मी नारायण मंदिर की तरफ से आयोजित रक्तदान अभियान हुआ था जहां करीब 800 यूनिट रक्त का संग्रह किया गया, इस पूरे कार्यक्रम को हमारी टीम की तरफ से पॉलीथिन मुक्त बनाया गया, हमने रक्तदाताओं को भी गन्ने का जूस काँच के ग्लास में उपलब्ध कराया, पूरा अभियान प्लास्टिक फ्री रहा, जलपान और खाने के लिए भी बर्तन बैंक से सहयोग लिया गया ।

पॉलीथीन के वैकल्पिक समाधान और इसे लोगों को समझाने के तरीके क्या है?

पॉलीथीन के उपयोग को रोकने के लिए हमें खुद पहल करनी होगी। सिर्फ जागरूकता फैलाने से काम नहीं चलेगा, बल्कि हमें अपनी आदतें बदलनी होंगी और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करना होगा। पॉलीथीन के वैकल्पिक समाधान, कपड़े और जूट के बैग हैं, ये मजबूत होते हैं और बार-बार इस्तेमाल किए जा सकते हैं।

कागज के बैग भी हल्के और रिसाइकिल होने योग्य होते हैं, लेकिन पानी में जल्दी खराब हो सकते हैं। बर्तन बैंक और पुनः उपयोग योग्य थालियां, शादी, पार्टी और छोटे आयोजनों में डिस्पोजल के बजाय स्टील के बर्तनों का उपयोग करना चाहिए।

कृपया हमारे पाठकों को अपने अनुभव के आधार पर एक संदेश दें कि इस परिवर्तन को आगे बढ़ाने के लिए क्या कदम उठाना चाहिए ?

अपने से, घर-मोहल्ले से शुरुआत करें, शादी-विवाह, जन्मदिन, धार्मिक आयोजनों और अन्य सामाजिक कार्यक्रमों में डिस्पोजल प्लेट्स और कप के स्थान पर स्टील या मिट्टी के बर्तनों का उपयोग करें। बर्तन बैंक से बर्तन किराए पर लें ताकि प्लास्टिक कचरा कम हो। अपने घर में मेहमानों को हमेशा रियूजेबल प्लेट और कप में ही भोजन परोसें, जिससे एक आदत बने।

इसकी जिम्मेदारी स्वयं लेनी होगी और दूसरों को भी प्रेरित करना होगा। पॉलीथीन को हटाने का काम सिर्फ सरकार या संगठनों का नहीं है, बल्कि यह हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है। हमारा उद्देश्य सिर्फ पॉलीथीन का विरोध करना नहीं, बल्कि कपड़े और जूट के थैलों को अपनाने की आदत डालना भी है। यदि हर व्यक्ति अपनी दैनिक जिंदगी से पॉलीथीन को बाहर कर दे, तो यह अभियान एक क्रांति में बदल सकता है। ■

एक लीटर पानी की बोतल बनाने में लगभग साढ़े तीन लीटर पानी की खपत होती है। यह अपने आप में एक चिंताजनक तथ्य है, जिसे हमें गंभीरता से समझना होगा। जहां ये बोतलें बनाई जाती हैं, वहां उच्च तापमान वाली फैक्ट्रियां होती हैं, जिनमें ठंडक के लिए कूलर और भारी मात्रा में पानी का उपयोग किया जाता है।

ISSN No. 2581-3528

वित्तीय वर्ष 2025–26 का अतुलनीय बजट

प्रहलाद सबनानी
सेवानिवृत्त उप महाप्रबंधक,
भारतीय स्टेट बैंक

मध्यमवर्गीय करदाता को इस बजट से लगभग 1 लाख रुपए तक की राशि की बचत होने की सम्भावना है। कर में छूट से देश के 2 करोड़ मध्यमवर्गीय करदाताओं को कुल एक लाख करोड़ रुपए की राशि का लाभ होगा। इससे देश के मध्यमवर्गीय एवं गरीब परिवारों को अतिरिक्त राशि उपलब्ध होगी जिसे वे विभिन्न उत्पादों की खरीद पर खर्च करेंगे और देश की अर्थव्यवस्था को गति देने में सहायक होंगे।

दिनांक 1 फरवरी 2025 को केंद्र सरकार की वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमन ने वित्त वर्ष 2025–26 के लिए लोक सभा में बजट पेश किया। श्रीमती सीतारमन ने एक महिला वित्त मंत्री के रूप में लगातार 8वां बजट लोकसभा में पेश कर एक रिकार्ड बनाया है। वित्तमंत्री द्वारा लोक सभा में पेश किया गया बजट अपने आप में पथप्रदर्शक, अग्रणी एवं अतुलनीय बजट कहा जा रहा है क्योंकि इस बजट के माध्यम से किसानों, युवाओं, महिलाओं, गरीब एवं मध्यम वर्ग का विशेष ध्यान रखा गया है। पिछले कुछ समय से देश की अर्थव्यवस्था में विकास की गति कुछ धीमी पड़ती हुई दिखाई दे रही थी अतः विशेष रूप से मध्यम वर्ग एवं गरीब वर्ग के हाथों में अधिक धनराशि शेष बच सके ताकि वे विभिन्न उत्पादों को खरीदकर अर्थव्यवस्था में इनकी मांग बढ़ा सकें, ऐसा प्रयास इस बजट के माध्यम से किया गया है। साथ ही, भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के उद्देश्य से रोजगार उन्मुख क्षेत्रों यथा कृषि क्षेत्र, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग, निवेश, निर्यात एवं समावेशी विकास जैसे क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है ताकि इन्हें विकास के इंजिन के रूप में विकसित किया जा सके।

भारत में मध्यमवर्गीय परिवार देश की अर्थव्यवस्था को गति प्रदान करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। वर्तमान में प्रत्यक्ष कर संग्रहण में व्यक्तिगत आयकर की भागीदारी कॉर्पोरेट क्षेत्र की भागीदारी से भी अधिक हो गई है। अतः मोदी सरकार से अब यह अपेक्षा की जा रही थी कि मध्यमवर्गीय परिवारों को बजट के माध्यम से कुछ राहत दी जाय। मुद्रा स्फीति की सबसे अधिक मार भी गरीब एवं मध्यमवर्गीय परिवारों पर ही पड़ती है। वित्त मंत्री ने मध्यमवर्गीय परिवारों को राहत प्रदान करने के उद्देश्य से आयकर की वर्तमान सीमा को 7 लाख रुपए से बढ़ाकर 12 लाख रुपए कर दिया है। अर्थात अब 12 लाख रुपए तक की आय अर्जित करने वाले नागरिकों पर किसी भी प्रकार का आयकर नहीं लगेगा। वेतन एवं पेंशन पाने वाले नागरिकों को 75,000 रुपए की स्टैंडर्ड कटौती की राहत इसके अतिरिक्त प्राप्त होगी। इस वर्ग के करदाताओं को 12.75 लाख रुपए तक की वार्षिक आय पर कोई आयकर नहीं चुकाना होगा। इसके साथ हीं, आयकर की दरों में भी परिवर्तन कर करदाताओं को लाभ देने का प्रयास किया गया है। मध्यमवर्गीय करदाता को उक्त सुधारों से लगभग 1 लाख रुपए तक की राशि की बचत होने की सम्भावना है। कर में छूट से देश के 2 करोड़ मध्यमवर्गीय करदाताओं को कुल एक लाख करोड़ रुपए की राशि का लाभ होगा। इससे देश के मध्यमवर्गीय एवं गरीब परिवारों को

ISSN No. 2581-3528

अतिरिक्त राशि उपलब्ध होगी जिसे वे विभिन्न उत्पादों की खरीद पर खर्च करेंगे और देश की अर्थव्यवस्था को गति देने में सहायक होंगे। मध्यमवर्गीय एवं गरीब परिवारों ने जितना सोचा था शायद उससे भी कहीं अधिक राहत उन्हें इस बजट के मध्यम से दी गई है। इसीलिए ही, इस बजट को अग्रणी, पथप्रदर्शक एवं अतुलनीय बजट की संज्ञा दी जा रही है।

मध्यमवर्गीय एवं गरीब परिवारों को, आयकर में छूट और राहत देते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि इससे बजटीय घाटा में वृद्धि नहीं हो। वित्तीय वर्ष 2024-25 में बजटीय घाटा सकल घरेलू उत्पाद का 5.9 प्रतिशत रहने की सम्भावना पूर्व में की गई थी, परंतु अब संशोधित अनुमान के अनुसार यह बजटीय घाटा कम होकर 5.8 प्रतिशत रहने की सम्भावना है। साथ ही, वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए बजटीय घाटा 5.4 रहने का अनुमान लगाया गया है। अतः देश की वित्तीय व्यवस्था पर किसी भी प्रकार का विपरीत प्रभाव नहीं पड़ने जा रहा है। हां, पूंजीगत खर्चों में जरूर कुछ कमी रही है और वित्तीय वर्ष 2024-25 में 11.11 लाख करोड़ रुपए के पूंजीगत खर्च के अनुमान के विरुद्ध 10.18 लाख करोड़ रुपए का पूंजीगत खर्च होने की सम्भावना व्यक्त की गई है। हालांकि वित्तीय वर्ष 2025-26 में 11.12 लाख करोड़ रुपए के पूंजीगत खर्च की व्यवस्था बजट में की गई है। इस राशि को 11.11 लाख करोड़ रुपए से बढ़ाकर वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए 15 लाख करोड़ रुपए किया जाना चाहिए था क्योंकि पूंजीगत खर्च में वृद्धि से देश में आर्थिक विकास की दर तेज होती है और रोजगार के नए अवसर निर्मित होते हैं। इस संदर्भ में एक रास्ता यह निकाला गया है कि केंद्र सरकार के उपक्रमों एवं निजी क्षेत्र की कम्पनियों से अपेक्षा की गई है कि वित्तीय वर्ष 2025-26 में ये संस्थान भी अपने पूंजीगत खर्चों में वृद्धि करें ताकि उनके द्वारा किए गए पूंजीगत खर्चों की राशि को मिलाकर कुल पूंजीगत खर्च को 15 लाख करोड़ रुपए से ऊपर ले जाया जाए।

भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के उद्देश्य से राज्यों के साथ मिलकर कृषि धन धान्य योजना को 100 जिलों में प्रारम्भ किया जा रहा है, इस योजना के माध्यम से इन जिलों में ली जा रही फसलों की उत्पादकता में वृद्धि करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। दलहन के उत्पादन में आत्म निर्भरता प्राप्त करने के लिए 6 वर्षीय मिशन चलाया जाएगा। किसान क्रेडिट कार्ड की ऋण सीमा को 5 लाख तक बढ़ाया जा रहा है। सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से ऋण सीमा को 5 करोड़ रुपए से बढ़ाकर 10 करोड़ रुपए एवं स्टार्टअप के लिए ऋण की सीमा को 10 करोड़ रुपए से बढ़ाकर 20 करोड़ रुपए किया जा रहा है। लेदर उद्योग में रोजगार के 22 लाख नए अवसर निर्मित किए जाने के प्रयास किए जा रहे हैं। भारत को खिलौना उत्पादन का अंतरराष्ट्रीय केंद्र बनाया जाएगा। यूरिया उत्पादन के क्षेत्र में भारत को आत्मनिर्भर बनाया जाएगा। आज भारत खाद्य तेलों का भारी मात्रा में आयात करता है अतः तिलहन के क्षेत्र में भी आत्मनिर्भरता हासिल करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। भारत में निर्मित विभिन्न उत्पादों के निर्यात को बढ़ावा देने के उद्देश्य से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नए बाजारों की तलाश करते हुए विभिन्न देशों के साथ द्विपक्षीय व्यापारिक समझौते सम्पन्न किए जा रहे हैं। देश में बीमा क्षेत्र को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बीमा क्षेत्र में 100 प्रतिशत विदेशी निवेश की अनुमति प्रदान की जा रही है। विभिन्न शहरों में आधारभूत संरचना के विकास के लिए एक लाख करोड़ रुपए का एक विशेष फंड बनाया जा रहा है।

श्री अयोध्या धाम, महाकुम्भ क्षेत्र प्रयागराज, काशी विश्वनाथ मंदिर वाराणसी, महाकाल मंदिर उज्जैन की तर्ज पर अन्य धार्मिक स्थलों को भी विकसित किया जाएगा ताकि देश में धार्मिक पर्यटन की गतिविधियों को और अधिक आगे बढ़ाया जा सके। देश में 52 नए पर्यटन केंद्र भी विकसित किए जाने की योजना बनाई गई है तथा भगवान बुद्ध सर्किट भी विकसित किया जाएगा।

युवाओं में कौशल विकास के लिए अतिरिक्त प्रयास किए जा रहे हैं। साथ ही, आगामी 5 वर्षों में देश के मेडिकल कॉलेजों में 75,000 युवाओं को अतिरिक्त दाखिले दिए जाएंगे। इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी कॉलेजों में रीसर्च के लिए 10,000 पी. एम. स्कॉलरशिप प्रदान की जाएंगी एवं नए आईआईटी केंद्रों की स्थापना भी की जाएगी। आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस सेंटर को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 500 करोड़ रुपए की सहायता राशि प्रदान की जाएगी।

श्री अयोध्या धाम, महाकुम्भ क्षेत्र प्रयागराज, काशी विश्वनाथ मंदिर वाराणसी, महाकाल मंदिर उज्जैन की तर्ज पर अन्य धार्मिक स्थलों को भी विकसित किया जाएगा ताकि देश में धार्मिक पर्यटन की गतिविधियों को और अधिक आगे बढ़ाया जा सके। देश में 52 नए पर्यटन केंद्र भी विकसित किए जाने की योजना बनाई गई है तथा भगवान बुद्ध सर्किट भी विकसित किया जाएगा। ■

ISSN No. 2581-3528

आत्मनिर्भरता के साथ रक्षा क्षेत्र में भारत की मजबूती

पंकज जगन्नाथ जयस्वाल
ब्लॉगर एवं शिक्षाविद्

हमारा राष्ट्र पाकिस्तान, बांग्लादेश और चीन जैसे दुश्मनों से घिरा हुआ है, जो सीमाओं और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर संचालन के विभिन्न तरीकों का उपयोग करके हमारे महान राष्ट्र को कमजोर करने के लिए अथक प्रयास कर रहे हैं, साथ ही विभिन्न राज्यों में उग्रवादी नक्सलियों को विकसित कर रहे हैं, साथ ही विभिन्न राज्यों में अशांति पैदा करने के लिए बौद्धिक शहरी नक्सलियों को भी विकसित कर रहे हैं। हम पहले से ही जानते हैं कि पंडित जवाहरलाल नेहरू के प्रधान मंत्री रहते हुए चीन ने हमारी बहुत बड़ी भूमि पर कब्जा कर लिया था और पाकिस्तान ने सैकड़ों नागरिकों और हमारे सैनिकों को हत्या की है। यदि कोई देश सैन्य रूप से कमजोर है और उसके पास मजबूत हथियार, आयुध और गोला–बारूद की कमी है, तो अन्य देश स्थिति का लाभ उठाएंगे, जैसा कि हमने 2014 से पहले देखा है। मोदी शासन के पिछले दस वर्षों में स्थिति बदल गई है। आइए देखें कि हमारी रक्षा स्थिति सैन्य और वित्तीय दोनों रूप से कैसे बदल गई है?

रक्षा में आत्मनिर्भरता के प्रति भारत का समर्पण एक प्रमुख हथियार आयातक से स्वदेशी निर्माण के उभरते केंद्र में इसके परिवर्तन से प्रदर्शित होता है। वित्त वर्ष 2023–24 में रक्षा मंत्रालय ने रणनीतिक सरकारी नीतियों द्वारा संचालित घरेलू रक्षा उत्पादन में रिकॉर्ड ₹1.27 लाख करोड़ की वृद्धि दर्ज की। पहले अंतरराष्ट्रीय आपूर्तिकर्ताओं पर निर्भर रहने वाला भारत अब अपनी सुरक्षा मांगों को पूरा करने के लिए आत्मनिर्भर विनिर्माण को प्राथमिकता देता है, जो राष्ट्रीय लचीलापन सुधारने और बाहरी स्रोतों पर निर्भरता कम करने की उसकी महत्वाकांक्षा की पुष्टि करता है।

भारत के रक्षा उत्पादन में वृद्धि : भारत ने वित्त वर्ष 2023–24 के दौरान मूल्य के संदर्भ में स्वदेशी रक्षा उत्पादन में अब तक की सबसे अधिक वृद्धि दर्ज की, जिसका श्रेय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के उद्देश्य से सरकारी नीतियों और कार्यक्रमों के सफल कार्यान्वयन को जाता है। डीपीएसयू, सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों और निजी कंपनियों के आंकड़ों के अनुसार, रक्षा उत्पादन 2014–15 में 46,429 करोड़ रुपये से 174 प्रतिशत बढ़कर 1,27,265 करोड़ रुपये के नए उच्च स्तर पर पहुंच गया है।

ऐतिहासिक रूप से, भारत अपनी रक्षा जरूरतों के लिए बड़े पैमाने पर दूसरे देशों पर निर्भर रहा है, जिसमें लगभग 65–70 प्रतिशत रक्षा उपकरण आयात किए जाते थे। हालांकि, माहौल काफी बदल गया है, अब 65 प्रतिशत से अधिक रक्षा उपकरण भारत में बनाए जाते हैं। यह परिवर्तन इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में आत्मनिर्भरता के लिए देश की प्रतिबद्धता को दर्शाता है और इसके रक्षा औद्योगिक आधार की ताकत को उजागर करता है, जिसमें 16 रक्षा सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयां, 430 से अधिक लाइसेंस प्राप्त कंपनियां और लगभग 16,000 सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम शामिल हैं। उल्लेखनीय रूप से, इस उत्पादन का 21 प्रतिशत निजी क्षेत्र से आता है, जो भारत के आत्मनिर्भरता के मार्ग को बढ़ावा देता है।

धनुष आर्टिलरी गन सिस्टम, एडवांस्ड टोड आर्टिलरी गन सिस्टम (एटीएजीएस), मुख्य युद्धक टैंक (एमबीटी) अर्जुन, लाइट कॉम्बैट एयरक्राफ्ट (एलसीए) तेजस, पनडुब्बियां, फ्रिगेट, कोरवेट और हाल ही में कमीशन किए गए आईएनएस विक्रांत जैसे प्रमुख रक्षा प्लेटफॉर्म 'मेक इन इंडिया' पहल के हिस्से के रूप में विकसित किए गए हैं, जो भारत की बढ़ती रक्षा क्षेत्र की क्षमताओं को प्रदर्शित करते हैं। वार्षिक रक्षा उत्पादन ₹1.27 लाख करोड़ से अधिक हो गया है और चालू वित्त वर्ष में ₹1.75 लाख करोड़ को पार करने की उम्मीद है। भारत का लक्ष्य 2029 तक रक्षा उत्पादन को बढ़ाकर ₹3 लाख करोड़ करना है, जिससे वह खुद को दुनिया भर में विनिर्माण केंद्र के रूप में स्थापित कर सके। भारत का रक्षा निर्यात वित्त वर्ष 2013–14 में ₹686 करोड़ से बढ़कर वित्त वर्ष 2023–24 में ₹21,083 करोड़ हो गया है, यह उपलब्धि सरकार द्वारा किए गए प्रभावी नीतिगत

सुधारों, पहलों और व्यापार करने में आसानी में सुधार का परिणाम है, जिसका लक्ष्य रक्षा में आत्मनिर्भरता हासिल करना है। पिछले वित्त वर्ष की तुलना में रक्षा निर्यात में 32.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जो ₹15,920 करोड़ थी।

भारत के निर्यात पोर्टफोलियो में उन्नत रक्षात्मक उपकरणों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है, जैसे बुलेटप्रूफ जैकेट और हेलमेट, डोर्नियर (Do-228) विमान, चेतक हेलीकॉप्टर, त्वरित इंटरसेप्टर नौकाएं और हल्के टॉरपीडो। एक उल्लेखनीय विशेषता रूसी सेना के उपकरणों में 'मेड इन बिहार' बूटों को शामिल करना है, जो वैश्विक रक्षा बाजार में भारतीय उत्पादों के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर का प्रतिनिधित्व करता है, साथ ही देश के मजबूत विनिर्माण मानकों को भी प्रदर्शित करता है। भारत वर्तमान में 100 से अधिक देशों को निर्यात करता है, जिसमें 2023-24 में रक्षा निर्यात के मामले में संयुक्त राज्य अमेरिका, फ्रांस और आर्मेनिया पहले से तीसरे स्थान पर हैं। रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह का लक्ष्य 2029 तक रक्षा निर्यात को 50,000 करोड़ रुपये तक बढ़ाना है।

प्रमुख सरकारी पहल : हाल के वर्षों में, भारत सरकार ने देश की रक्षा उत्पादन क्षमता बढ़ाने और आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के उद्देश्य से कई परिवर्तनकारी परियोजनाएं शुरू की हैं। इन नीतियों का उद्देश्य निवेश आकर्षित करना, घरेलू विनिर्माण में सुधार करना और खरीद प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करना है। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (**FDI**) की सीमाओं को उदार बनाने से लेकर स्वदेशी विनिर्माण को बढ़ावा देने तक, ये कदम भारत के रक्षा औद्योगिक आधार को मजबूत करने के लिए एक मजबूत प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करते हैं। निम्नलिखित बिंदु उन महत्वपूर्ण सरकारी प्रयासों का सारांश देते हैं जिन्होंने रक्षा क्षेत्र में विकास और नवाचार को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

उदारीकृत FDI नीति : 2020 में, रक्षा क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) की सीमा को नए रक्षा औद्योगिक लाइसेंस चाहने वाली कंपनियों के लिए स्वचालित मार्ग के माध्यम से 74 प्रतिशत तक बढ़ा दिया गया था और आधुनिक तकनीकों तक पहुंच की उम्मीद करने वालों के लिए सरकारी मार्ग के माध्यम से 100 प्रतिशत तक बढ़ा दिया गया था। 9 फरवरी, 2024 तक, रक्षा फर्मों ने ₹5,077 करोड़ का एफडीआई घोषित किया है। रक्षा मंत्रालय का 2024-25 के लिए बजट आवंटन ₹6,21,940.85 करोड़ है था जो कि बजट सत्र के दौरान संसद में पेश की गई 'अनुदान मांग' का हिस्सा है।

घरेलू खरीद को प्राथमिकता : रक्षा अधिग्रहण प्रक्रिया (डीएपी)-2020 घरेलू स्रोतों से पूंजीगत उत्पादों की खरीद पर जोर देती है।

सकारात्मक स्वदेशीकरण सूचियां : सेवाओं की कुल 509 वस्तुओं और रक्षा सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (डीपीएसयू) से 5,012 वस्तुओं की पांच 'सकारात्मक स्वदेशीकरण सूचियों' की अधिसूचना, निर्दिष्ट समय सीमा के बाद आयात पर प्रतिबंध के साथ तैयार की गई है।

सरलीकृत लाइसेंस प्रक्रिया : औद्योगिक लाइसेंस प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करना और लंबी वैधता अवधि प्रदान करना।

iDEX योजना का शुभारंभ: रक्षा उत्कृष्टता के लिए नवाचार (iDEX) परियोजना को रक्षा नवाचार में स्टार्टअप और सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (MSME) को शामिल करने के लिए विकसित किया गया था।

सार्वजनिक खरीद वरीयता : घरेलू उत्पादकों की सहायता के लिए सार्वजनिक खरीद (मेक इन इंडिया को वरीयता) आदेश 2017 को लागू किया गया है।

स्वदेशीकरण पोर्टल : भारतीय उद्योग, विशेष रूप से एमएसएमई में स्वदेशीकरण में सहायता के लिए संयुक्त कार्रवाई के माध्यम से आत्मनिर्भर पहल (SRIJAN) पोर्टल शुरू किया गया है।

रक्षा औद्योगिक गलियारे: रक्षा निर्माण को बढ़ावा देने के लिए दो रक्षा औद्योगिक गलियारे स्थापित किए जा रहे हैं, एक उत्तर प्रदेश में और दूसरा तमिलनाडु में। नवाचार और सहयोग को प्रोत्साहित करने के लिए रक्षा अनुसंधान एवं विकास अब उद्योग और स्टार्टअप के लिए खुला है।

घरेलू खरीद आवंटन : 2024-25 के बजट अनुमानों में पूंजी अधिग्रहण (आधुनिकीकरण) खंड के अंतर्गत कुल ₹1,40,691.24 करोड़ में से ₹1,05,518.43 करोड़ (75:) घरेलू खरीद के लिए आवंटित किए गए हैं।

निष्कर्ष – रक्षा में आत्मनिर्भरता के लिए भारत का मार्ग आयात पर निर्भरता से आत्मनिर्भर विनिर्माण केंद्र बनने की ओर एक क्रांतिकारी बदलाव को दर्शाता है। घरेलू उत्पादन और निर्यात में रिकॉर्ड परिणाम राष्ट्रीय सुरक्षा को मजबूत करने और मजबूत रक्षा उपायों के माध्यम से आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करते हैं। रणनीतिक नीतियों के साथ, स्वदेशीकरण पर बढ़ते जोर और एक संपन्न रक्षा औद्योगिक आधार के साथ, भारत न केवल अपनी सुरक्षा मांगों को पूरा करने के लिए अच्छी स्थिति में है, बल्कि वैश्विक हथियार बाजार में एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में उभरने के लिए भी तैयार है। भविष्य के उत्पादन और निर्यात के लिए स्थापित किए गए ऊंचे लक्ष्य दुनिया भर में एक भरोसेमंद रक्षा भागीदार के रूप में देश की स्थिति को मजबूत करने के लिए एक मजबूत प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करते हैं। भारत जैसे-जैसे उद्योगों में नवाचार और सहयोग करना जारी रखता है, वह वैश्विक रक्षा विनिर्माण में एक मजबूत खिलाड़ी के रूप में अपनी स्थिति को मजबूत करने की राह पर है। (स्रोतः पीआईबी)

रक्षा में आत्मनिर्भरता के प्रति भारत का समर्पण एक प्रमुख हथियार आयातक से स्वदेशी निर्माण के उभरते केंद्र में इसके परिवर्तन से प्रदर्शित होता है। वित्त वर्ष 2023-24 में रक्षा मंत्रालय ने रणनीतिक सरकारी नीतियों द्वारा संचालित घरेलू रक्षा उत्पादन में रिकॉर्ड ₹1.27 लाख करोड़ की वृद्धि दर्ज की।

ISSN No. 2581-3528

जैसा कर्म वैसा फल, बंद हो गई हिंडनबर्ग

मृत्युंजय दीक्षित
लेखक एवं स्तम्भकार

अमेरिका में भारत समर्थक नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के शपथ ग्रहण समारोह के पूर्व ही अमेरिका से भारत हित के दो महत्वपूर्ण समाचार प्राप्त हुए हैं, जिनके कारण जहां एक और भारतीय शेयर बाजार में आनंद उत्सव मनाया जा रहा है वहीं दूसरी ओर कुछ राजनीतिक हलकों में निराशा व दुख का वातावरण है। जिस कंपनी की रिपोर्ट को आधार मानकर कांग्रेस नेता राहुल गांधी के नेतृत्व में संपूर्ण विपक्ष हर चुनाव में अंबानी-अडानी, अंबानी-अडाणी की रट लगा रहा था अब वह कंपनी ही बंद हो गई है। अमेरिका से दूसरा समाचार यह है कि अमेरिका ने भारत पर लगे परमाणु प्रतिबंध को समाप्त कर दिया है।

अमेरिका की इन्वेस्टमेंट रिसर्च फर्म और शॉर्ट सेलिंग कंपनी हिंडनबर्ग के संस्थापक नाथन एंडरसन ने कंपनी बंद करने की घोषणा की, यह घोषणा उस समय की गई है जब हिंडनबर्ग रिसर्च कंपनी न्याय विभाग और यूएस एसईसी द्वारा जांच के दायरे में आ गई। कंपनी को नियमों के उल्लंघन के लिए भारतीय नियामक सेबी द्वारा जांच और कारण बताओ नोटिस भी जारी किया जा चुका है। कई अन्य नियामकों ने भी हिंडनबर्ग पर चारों ओर से शिकंजा कसा।

लोकसभा, उसके बाद हुए विधान सभा चुनावों के बाद संसद के विगत शीतकालीन सत्र में भी विपक्ष ने अडाणी का मुद्दा उठाकर सदन की कार्यवाही तक नहीं चलने दी। राहुल गांधी ने एक पोस्टर जारी किया, जिसमें प्रधानमंत्री मोदी और गौतम अडाणी का चित्र बना था तथा लिखा था “एक हैं तो सेफ हैं।” विपक्ष हिंडनबर्ग की रिपोर्ट के आधार पर सुप्रीम कोर्ट तक चला गया था यद्यपि वहां उसे मात खानी पड़ी थी। विपक्ष हिंडनबर्ग की तथाकथित रिपोर्ट के मुद्दे की जांच संयुक्त संसदीय समिति से कराने की मांग कर रहा था किन्तु उनका परम हितैषी हिंडनबर्ग अमेरिका में अपनी जांच प्रारंभ होने से पहले ही दुकान बंद करके भाग खड़ा हुआ।

अमेरिका की इन्वेस्टमेंट रिसर्च फर्म और शॉर्ट सेलिंग कंपनी हिंडनबर्ग के संस्थापक नाथन एंडरसन ने कंपनी बंद करने की घोषणा की, यह घोषणा उस समय की गई है जब हिंडनबर्ग रिसर्च कंपनी न्याय विभाग और यूएस एसईसी द्वारा जांच के दायरे में आ गई। कंपनी को नियमों के उल्लंघन के लिए भारतीय नियामक सेबी द्वारा जांच और कारण बताओ नोटिस भी जारी किया चुका है। कई अन्य नियामकों ने भी हिंडनबर्ग पर चारों ओर से शिकंजा कसा। इस कंपनी ने अभी तक सेबी के नोटिस का जवाब तक नहीं दिया है।

जब से हिंडनबर्ग के बंद होने की घोषणा हुई है, तब से सोशल मीडिया के सभी प्लेटफार्म पर इसको लेकर हलचल है, एक यूजर ने लिखा, “कितने गाजी आए और कितने गाजी गए”। सोशल मीडिया में कहा जा रहा है कि एक बात तो स्पष्ट हो गई है कि हिंडनबर्ग सुपारी लेकर भारत की अर्थव्यवस्था को बर्बाद करने और निजी मुनाफा कमाने के लिए काम कर रहा था। कुछ यूजर्स का कहना है कि हिंडनबर्ग रिसर्च के

ISSN No. 2581-3528

बंद होने का फैसला हैरान करने वाला है। यह फैसला उस समय लिया गया जब अमेरिकी न्याय विभाग हिंडनबर्ग की जांच करने की योजना बना रहा था। यह फैसला उस समय लिया गया जब ट्रंप सत्ता में आने जा रहे थे। इस बात की भी गहराई से जांच होनी चाहिए कि राहुल गांधी और कांग्रेस पार्टी ने हिंडनबर्ग की रिपोर्ट पर कैसे भरोसा कर लिया था? इसी रिपोर्ट के आधार पर राहुल गांधी ने अपने मित्रों के साथ प्रेस वार्ता कर संसद की कार्यवाही बाधित की थीं।

हिंडनबर्ग ने अपने सात वर्ष के कार्यकाल में सात बड़े शिकार किए और शेयर बाजार में उन्हें लहूलुहान कर डाला, इसी क्रम में कंपनी ने अडाणी समूह को भी लगातार निशाना बनाया। हिंडनवर्ग 2023 में कम्पनी रिपोर्ट प्रकाशित करके अडाणी समूह पर कारपोरेट धोखाधड़ी का आरोप लगाती रही जिससे अडाणी समूह को वित्तीय मोर्चे पर दबाव का सामना करना पडा। हिंडनबर्ग ने सेबी प्रमुख माधवी पुरी और उनके पति धवल बुच पर हितों के टकराव का आरोप लगाया। कंपनी ने दावा किया था कि उनकी विदेश स्थित ऐसी कंपनियों में हिस्सेदारी है जो गौतम अडाणी के लिए पैसों की हेराफेरी करती हैं। 2023 में हिंडनबर्ग रिसर्च ने आय और राजस्व की रिपोर्टिंग को लेकर इकान एंटरप्राइजेज एलपी की आलोचना की थीं। हिंडनबर्ग 2020 में इलेक्ट्रिक ट्रक बनाने वाली कंपनी निकोला के पीछे पड़ गयी थीं कहा गया कि निकेला ने अपनी तकनीक को लेकर निवेशकों से झूठ बोला है। इस मामले में एक यूएस ज्यूरी ने 2022 में निकोला के संस्थापक ट्रेवर मिल्टन को धोखाधड़ी का दोषी करार दिया था। इसी प्रकार हिंडनबर्ग कंपनी ने पेमेंट कंपनी ब्लाक इंक में शॉर्ट पोजिशन मामले में आरोप लगाया कि कंपनी ने यूजर्स की संख्या को बढ़ा चढ़ाकर और लागत को कम करके दिखाया है। इसी प्रकार हिंडनबर्ग ने 2022 में ट्विटर इंक पर चढ़ाई कर दी थीं। 2022 में ही जेएंडजे परचेजिंग के खिलाफ जांच प्रारम्भ कर दी थीं। इसके लिए हिंडनबर्ग ने किसी प्रकार से कंपनी के निगरानी वाले फुटेज तक प्राप्त कर लिये थे। फुटेज से पता चला कि जे एंड जे की मार्केटिंग टीम के लोग लोगों को धोखाधड़ी वाली निवेश स्कीम में निवेश करने के लिए प्रोत्साहित कर रहे थे।

भारत में प्रवेश करते ही हिंडनबर्ग के सपने ऐसे चकनाचूर हुए कि वह अपनी दुकान बंद करके भाग निकली। भारत में मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस नेता राहुल गांधी व संपूर्ण विपक्ष ने अडाणी समूह पर लगातार दोहरा रवैया अपना रखा है। एक ओर यह लोग अपनी सरकार वाले राज्यों में अडाणी समूह को निवेश के लिए बुलाते हैं और दूसरी और उनके नाम पर संसद ठप करते हैं। बीच में आए और सत्य सिद्ध हुए समाचार कि हिंडनबर्ग का मालिक नैट एंडरसन का भारत विरोधी जार्ज सोरोस से सीधा संपर्क रहा है। हिंडनबर्ग कंपनी अपना नया खुलासा करने से एक दिन पूर्व ही एक रहस्यमय ई मेल संदेश जारी कर देती थीं और उसके बाद का काम राहुल गांधी करते थे जिससे राजनीतिक गलियारों में गहमागहमी बढ़ जाती थीं और शेयर बाजार हिल जाते थे फिर इसी आधार पर संसद तथा राज्य विधानमंडलों में अराजकता फैलाई जाती थीं। इसीलिए कहा जा रहा है कि हिंडनबर्ग के बंद हो जाने के बाद जहां कुछ लोग आनंदोत्सव मना रहे हैं वहीं कुछ लोग दर्द से कराह उठे हैं।

ऐसा माना जा रहा है कि अमेरिका में सत्ता परिवर्तन के बाद अमेरिकी धरती पर भारत विरोधी हरकतें करने वालों का एजेंडा संभवतः नही चलेगा और न ही इसमें व्हाइट हाउस का सहयोग मिल सकेगा। यह भी कहा जा रहा है कि हिंडनबर्ग भारत विरोधी डीप स्टेट का ही एक अहम हिस्सा थी और ट्रंप के आगमन के साथ ही जब उसे लगा कि उसकी जांच होकर ही रहेगी और दूध का दूध, पानी का पानी हो जायेगा तो डर कर हिंडनबर्ग का मालिक एंडरसन कंपनी बंद कर भाग खड़ा हुआ।

जिन राजनीतिक तत्वों ने अपने स्वार्थ साधने की दृष्टि से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, भाजपा व संघ की छवि को नुकसान पहुंचाने का प्रयास किया तथा विदेशों में जाकर भारत विरोधी बयान दिए क्या अब वह लोग अपने कुकर्मो के लिए माफी मांगेंगे? इन स्वार्थी तत्वों से फिलहाल ऐसी आस लगाना बेकार ही है क्योंकि अब यह लोग अपनी बात को सही साबित करने के लिए कोई नया रास्ता ढूंढ रहे होंगे। इस पूरे प्रकरण में यह तथ्य भी जांचने योग्य हो गया है कि हिंडनबर्ग के सभी खुलासे संसद सत्र आरम्भ होने के पूर्व ही क्यों होते थे?

ऐसा माना जा रहा है कि अमेरिका में सत्ता परिवर्तन के बाद अमेरिकी धरती पर भारत विरोधी हरकतें करने वालों का एजेंडा संभवतः नहीं चलेगा और न ही इसमें व्हाइट हाउस का सहयोग मिल सकेगा। यह भी कहा जा रहा है कि हिंडनबर्ग भारत विरोधी डीप स्टेट का ही एक अहम हिस्सा थी और ट्रंप के आगमन के साथ ही जब उसे लगा कि उसकी जांच होकर ही रहेगी और दूध का दूध, पानी का पानी हो जायेगा तो डर कर हिंडनबर्ग का मालिक एंडरसन कंपनी बंद कर भाग खड़ा हुआ। अमेरिका के रिपब्लिकन सांसद हिंडनबर्ग की कड़ी जांच और उसे अमेरिकी कानूनों के तहत कड़ी सजा दिलाने की मांग कर रहे हैं और यह भी मांग कर रहे हैं कि हिंडनबर्ग से जुड़ी सभी फाइलों व कागजों को सुरक्षित रखा जाए क्योंकि अमेरिकी कानूनों के तहत जब वहां पर सत्ता परिवर्तन होता है तब जज भी बदल जाते हैं। ■

ISSN No. 2581-3528

बच्चों में संस्कार जागरण

मिली संगल
प्राचार्या, महर्षि दयानंद विद्यापीठ
पब्लिक स्कूल गोविंदपुरम, गाजियाबाद

योग जो सदियों से हिन्दू धर्म में प्रचलित है, शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए एक रामबाण उपाय है। हमें बच्चों को यह योग विज्ञान अवश्य सिखाना चाहिए। बच्चों को अगर हम योग का सही तरीका और इसके लाभ सिखाएं तो हमें किसी मनोवैज्ञानिक या कॉउंसलर की आवश्यकता नहीं होगी।

संस्कार, हां यही शब्द सही है। हम अगर इसे धर्म कहते हैं तो उससे जोड़ देते हैं तब यह आजकल की युवा पीढ़ी को ज्यादा समझ नहीं आता। हमें अपने धर्म से जुड़ी बातों को, हमारे संस्कारों को एक सही तरीके से, तार्किक रूप से बच्चों के सामने रखना चाहिए। संस्कार तो हम वैसे भी शुरू से नैतिक शिक्षा के रूप में सिखाते ही हैं।

मैंने अधिकतर महिलाओं को कहते सुना है, महिलायें इसलिए कह रहीं हूं क्योंकि शायद माँ ही अपने बच्चों को संस्कार सिखाती है। उन्हें ही यह उत्तरदायित्व दिया गया है। मैंने माताओं को अक्सर कहते सुना है कि हमारे बच्चे पूजा नहीं करते, शाम को दीपक नहीं जलाते, मंत्र उच्चारण नहीं करते। आजकल का युवा यह सब नहीं करना चाहता क्योंकि वो आलोचनात्मक व विवेकपूर्ण सोच रखता है। अगर हम यह सब उन्हें विज्ञान से जोड़कर समझायें तो ही कारगर होगा।

हमारे सबसे प्राचीन ग्रन्थ वेद हमें प्रकृति के रख–रखाव की प्रेरणा देते हैं। वेद हमें बताते हैं कि सूरज, पृथ्वी, जल, वायु सब कितने महत्वपूर्ण हैं, सौर ऊर्जा के कितने लाभ हैं। यह बातें बच्चा विद्यालय में भी पढ़ता है कि कैसे सौर ऊर्जा पेड़ों को भोजन बनाने में मदद करती है। अगर हम यह सब उन्हें बचपन से ऐसे ही समझाएं तो निश्चय ही वह प्रकृति के इन स्रोतों के महत्व को समझेंगे और उनका रख–रखाव करेंगे, सूर्य के तेज को समझेंगे और शायद उसकी आराधना और जल अर्पण भी करने लगें।

हिन्दू संस्कृति में कितने मंत्र हैं। क्या हमने कभी इनका सही उच्चारण अपने बच्चों को सिखाया है? वेद मंत्र को सही उच्चारण के साथ ही पढ़ना होता है। क्या हमने बच्चों को यह बताया है कि ऐसे उच्चारण से एक ध्वनि उत्पन्न होती है जिससे हमारी इन्द्रियां और नसें शांत हो जाती हैं? जैसे शिव पंचाक्षर मंत्र का अर्थ है पांच अक्षर का मंत्र – ऊँ, न, मः, शि, वा, य – का ऐसे ही उच्चारण करना होता है।

योग जो सदियों से हिन्दू धर्म में प्रचलित है, शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए एक रामबाण उपाय है। हमें बच्चों को यह योग विज्ञान अवश्य सिखाना चाहिए। बच्चों को अगर हम योग का सही तरीका और इसके लाभ सिखाएं तो हमें किसी मनोवैज्ञानिक या कॉउंसलर की आवश्यकता नहीं होगी।

उन्हें डराकर नहीं कि ऐसा नहीं करोगे तो ऐसा हो जायेगा बल्कि उन्हें समीक्षा और विश्लेषण द्वारा समझाकर, उसका महत्व बताकर और उसे वैज्ञानिक पक्ष से जोड़कर बताएंगे तो बच्चे समझेंगे भी और अपनायेंगे भी। इस लेख के माध्यम से हिन्दू धर्म के संस्कारों को अपने बच्चों में जागृत करने के विषय को लेकर अपना पक्ष रखने का प्रयास किया है। आशा करती हूँ, माताओं बहनों को जागरूक करने में सहायक होगा ताकि वे पढ़ें, सीखें और अपने बच्चों में संस्कारों को सम्प्रेषित कर पाएं। ■

जन्मदिवस विशेष - 21 फरवरी

महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का जन्म 21 फरवरी, 1899 (वसंत पंचमी) को हुआ था। यह परिवार उत्तर प्रदेश में उन्नाव के बैसवारा क्षेत्र में ग्राम गढ़ाकोला का मूल निवासी था । पर इन दिनों इनके पिता बंगाल में महिषादल के राजा के पास पुलिस अधिकारी और कोष प्रमुख के पद पर कार्यरत थे।

इनकी औपचारिक शिक्षा केवल कक्षा दस तक ही हुई थी पर इन्हें शाही ग्रन्थालय में बैठकर पढ़ने का भरपूर अवसर मिला। इससे इन्हें हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत तथा बांग्ला भाषाओं का अच्छा ज्ञान हो गया।

सूर्यकान्त को बचपन से ही विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर की रचनाएं पढ़ने में बहुत आनन्द आता था। यहीं से उनके मन में काव्य के बीज अंकुरित हुए। केवल 15 वर्ष की छोटी अवस्था में उनका विवाह मनोरमा देवी से हुआ। इनकी पत्नी ने भी इन्हें कविता लिखने के लिए प्रेरित किया। इनके एक पुत्र और एक पुत्री थी पर केवल 18 वर्ष की आयु में इनकी पुत्री सरोज का देहान्त हो गया। उसकी याद में निराला ने 'सरोज स्मृति' नामक शोक गीत लिखा, जो हिन्दी साहित्य की अमूल्य धरोहर है।

निराला जी के मन में निर्धनों के प्रति अपार प्रेम और पीड़ा थी। वे अपने हाथ के पैसे खुले मन से निर्धनों को दे डालते थे। एक बार किसी कार्यक्रम में उन्हें बहुत कीमती गरम चादर भेंट की गयी पर जब वे बाहर निकले, तो एक भिखारी ठण्ड में सिकुड़ रहा था। निराला जी ने वह चादर उसे दे दी। उनकी इस विशालहृदयता के कारण लोग उन्हें महाप्राण निराला कहने लगे। निर्धनों के प्रति इस करुणाभाव से ही उनकी 'वह आता, दो टूक कलेजे के करता, पछताता पथ पर आता...' नामक विख्यात कविता का जन्म हुआ।

निराला ने हिन्दी साहित्य को कई अमूल्य कविताएं व पुस्तकें दीं। उन्होंने कविता में मुक्तछन्द जैसे नये प्रयोग किये। कई विद्वानों ने इस व्याकरणहीन काव्य की आलोचना भी की पर निराला ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। उनके कवितापाठ की शैली इतनी मधुर एवं प्रभावी थी कि वे मुक्तछन्द से भी समां बांध देते थे। यद्यपि उन्होंने छन्दब काव्य भी लिखा है पर काव्य की मुक्तता में उनका अधिक विश्वास था। वे उसे नियमों और सिद्धान्तों के बन्धन में बाँधकर प्राणहीन करने के अधिक पक्षधर नहीं थे।

उस समय हिन्दी साहित्य में शुद्ध व्याकरण की कसौटी पर कसी हुई कविताओं का ही अधिक चलन था। अत: उनकी उन्मुक्तता को समकालीन साहित्यकारों ने आसानी से स्वीकार नहीं किया। कई लोग तो उन्हें कवि ही नहीं मानते थे पर श्रोता उन्हें बहुत मन से सुनते थे। अत: झक मारकर बड़े और प्रतिष्ठित साहित्यकारों को भी उन्हें मान्यता देनी पड़ी।

काव्य की तरह उनका निजी स्वभाव भी बहुत उन्मुक्त था। कभी वे कोलकाता रहे, तो कभी वाराणसी और कभी अपनी पितृभूमि गढ़ाकोला में। लखनऊ से निकलने वाली 'सुधा' नामक पत्रिका से सम्बद्ध रहने के कारण वे कुछ समय लखनऊ भी रहे। यहीं पर उन्होंने 'गीतिका' और 'तुलसीदास' जैसी कविता तथा 'अलका' एवं 'अप्सरा' जैसे उपन्यास लिखे। उन्होंने कई लघुकथाएं भी लिखीं। 'राम की शक्ति पूजा' उनकी बहुचर्चित कविता है।

अपने अन्तिम दिनों में निराला जी प्रयाग में बस गये। सुमित्रानन्दन पन्त, महादेवी वर्मा और निराला के कारण प्रयाग हिन्दी काव्य का गढ़ बन गया। वहीं 15 अक्टूबर, 1961 को उनका देहान्त हुआ।

प्रेरणा विमर्श 2020 के अवसर पर केशव संवाद पत्रिका के विशेषांक सिने विमर्श और भारतीय विरासत का विमोचन करते लोक सभा अध्यक्ष श्री ओम बिडला जी, गोवा की पूर्व राज्यपाल श्रीमती मृदुला सिन्हा जी, उत्तर प्रदेश के जल शक्ति मंत्री डॉ. महेन्द्र सिंह जी व अन्य अतिथिगण

केशव संवाद पत्रिका के विशेषांक अन्त्योदय की ओर का विमोचन करते सह सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबले जी, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी, वरिष्ठ लेखिका अद्वैता काला जी व अन्य अतिथिगण

केशव संवाद पत्रिका के विशेषांक पत्रकारिता के अग्रदूत का विमोचन करते उत्तर प्रदेश के मा.राज्यपाल श्री राम नाईक जी, पश्चिमी उत्तर प्रदेश के क्षेत्र संघचालक श्री सूर्यप्रकाश टोंक जी, माखनलाल चतुर्वेदी विवि. के पूर्व कुलपति श्री जगदीश उपासने जी व अन्य अतिथिगण